Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आलोक पुस्तकमाला

८

सेनापति-रत्नावली

महाकवि सेनापति की उत्तमोत्तम कविताओं का संग्रह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आलोक पुस्तकमाला

८

सेनापति-रत्नावली

महाकवि सेनापति की उत्तमोत्तम कविताओं का संग्रह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आलोक पुस्तकमाला सं० ८

सेनापति रत्नावली

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

संकलनकर्ता

प्रतापनारायण चतुर्वेदी

मुद्रक और प्रकाशक

भारतवासी प्रेस, दारागंज-इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशक
भारतवासी प्रेस
दारागंज—प्रयाग

acc: no: 14497
14497
Rs 0-12-0
212
Sri Pratap Singh Library Srinagar.

मूल्य ।।।)
सन् १९४१

मुद्रक
प्रतापनारायण चतुर्वेदी,
भारतवासी प्रेस, दारागंज-प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूमिका

आलोक पुस्तकमाला की आठवीं पुस्तक सेनापति रत्नावली प्रकाशित करते हमें अपार हर्ष हो रहा है। यह संग्रह तीन सोपानों में समाप्त किया गया है। इस संग्रह में सेनापति कवि की सर्वोत्तम रचनाओं के समावेश करने का प्रयत्न किया गया है।

इस पुस्तक के संकलन में मुझे पं० शेषनारायण शोकहा, एम० ए०-, एल० एल० बी० और पं० हरीकृष्ण चतुर्वेदी बी० ए०, हैडमास्टर रणवीर विद्यालय अमेठी से बड़ी सहायता मिली है अतएव इन मित्रों को मैं धन्यवाद देता हूँ।

प्रयत्न की सफलता या असफलता का निर्णय पाठक ही करेंगे। यदि पाठकों ने हमें उत्साहित किया तो हम आगे और भी कवियों की कृतियाँ अपनी पुस्तकमाला में प्रकाशित करेंगे।

—संकलनकर्ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सेनापति परिचय

कविवर सेनापति का स्थान हिन्दी साहित्य के इतिहास के मध्यकाल में आता है; कुछ विद्वानों के मतानुसार आप रीति-कालीन कवियों की परम्परा में आते हैं और कुछ के अनुसार भक्तिकालीन कवियों की श्रेणी में। परन्तु आपकी संपूर्ण रचनाओं को देखने से आपका स्थान भक्तिकालीन कवियों की ही श्रेणी में रखना समीचीन होगा। आपका आविर्भाव काल अनुमानतः १७ वीं शताब्दी के अन्त से १८ वीं शताब्दी के आरम्भ तक माना गया है।

आप अनूपशहर के रहने वाले थे जो कि बुलन्दशहर के जिले में गंगातट पर एक प्रसिद्ध कस्बा है। आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे, पिता का नाम गंगाधर, पितामह का नाम परशुराम तथा गुरु का नाम हीरामणि दीक्षित था। आपका जन्म काल सं० १६४६ के आस पास माना गया है। हृदय बड़ा ही शुद्ध, सरस तथा भावुक था। प्रतिभा भी इनकी बड़ी ही विलक्षण तथा प्रौढ़ थी। इसके अतिरिक्त कल्पनाशक्ति तीव्र तथा बहुमुखी थी। इनका सम्बन्ध मुसलमानी दरबारों से रहा तथा वहाँ अच्छा मान भी रहा इसका प्रमाण इनके कुछ कवित्तों से मिलता है। इन्होंने अपना परिचय एक छन्द में इस प्रकार दिया है।

दीछित परसराम दादौ है विदित नाम,
जिन कीन्हें जज्ञ, जाकी जग में बड़ाई है।
गंगाधर पिता गंगाधर के समान जाके,
गंगा तीर बसत 'अनूप जिन पाई है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महा जानमनि, विद्या दान हू में चिंतामनि,
हीरामनि दीछित तें पाई पंडिताई है।
सेनापति सोइ, सीतापति के प्रसाद जाकी,
सब कवि कान दै, सुनत कविताई है॥

आप स्वाभिमानी भी थे, आपकी रचनाओं में गर्वोक्तियाँ उचित जान पड़ती हैं। जैसे—

आपने करम करिहौं ही निवहौंगो तौब,
हौं ही करतार करतार तुम काहे के।

आप प्रधानतया राम भक्त थे परन्तु श्रीकृष्ण तथा शिवजी को भी मानते थे। शिवसिंह सरोज में लिखा है कि पीछे इन्होंने क्षेत्र संन्यास ले लिया था। इस बात की पुष्टि इस कथन द्वारा कुछ होती है—

सेनापति चाहत है सकल जनम भरि,
वृन्दावन सीमा तैं न बाहिर निकसिबौ।
राधा मनरंजन की शोभा नैन कंजन की,
मालगरे गुंजन की, कुंजन कौ बसिबौ॥

इनके भक्तिभाव से पूर्ण अनेक कवित्त कवित्तरत्नाकर में मिलते हैं। यथा—

महा मोह कंदनि में जगत जकंदिनि में,
दिन दुख-दुंदनि में जात है बिहाय कै।
सुख को न लेस है, कलेस सब भाँतिन को,
सेनापति याही ते कहत अकुलाय कै।
आवै मन ऐसी घर वार परिवार तजौं,
जरौ लोक लाज के समाज के बिसराय कै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरिजन पुंजनि में, वृन्दावन कुंजनि में,
रहौं बैठि कहूँ तरवर तर जाय कै॥

इनके रचे हुए दो ग्रन्थ कहे जाते हैं— १—काव्य कल्प द्रुम २—कवित्तरत्नाकर। प्रथम ग्रन्थ का अभी तक ठीक-ठीक पता नहीं लग सका है। दूसरा ग्रन्थ-कवित्तरत्नाकर-कवित्तों का संग्रह रूप है। यह ग्रन्थ सब से पिछला ग्रन्थ जान पड़ता है। क्योंकि उसकी रचना सं० १७०६ में हुई है यथा—

संवत सत्रह सौ छ में सेइ सियापति पाय।
सेनापति कविता सजी सज्जन सजौ सहाय॥

कवित्तरत्नाकर पाँच तरंगों में विभाजित है। प्रथम तरंग में कविवर ने कुछ प्रार्थना, स्वपरिचय, काव्य परिचय संवन्धी कवित्त लिखकर शेष ९६ छन्दों में श्लेषात्मक कवित्तों का सर्वोत्तम अनूठी एवं सर्वोत्कृष्ट संग्रह है। ऐसे कवित्तों का संग्रह हिन्दी साहित्य भर में नहीं प्राप्य है। दूसरी तरंग में ७४ कवित्त में शृङ्गार विषयक रचे गये हैं। तीसरी तरंग में ६२ छन्दों में ऋतु वर्णन सम्बन्धी सर्वोत्कृष्ट पद संग्रहीत हैं। चौथी तरंग में श्रीराम संबन्धी कथाओं का ७६ छन्दों में बड़ा ही सुन्दर भक्ति भाव पूर्ण वर्णन किया गया है। पाँचवीं तरङ्ग में भक्ति सम्बन्धी ८६ छन्द रचे गये हैं जिनमें १२ छन्द चित्र काव्य के भी हैं। इस प्रकार से कुल ३८४ छन्दों में यह 'कवित्त रत्नाकर' संग्रह तैयार हुआ है। इसी ग्रन्थ के आधार पर अब हम कविवर जी की काव्य कला पर दृष्टिपात करने का प्रयत्न करेंगे।

ऋतु वर्णन—सर्व प्रथम ऋतु वर्णन का विषय द्रष्टव्य है। इनका षट-ऋतु वर्णन हिन्दी साहित्य में अपने ढंग का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनूठा ही है, उसके टक्कर का दूसरा ऋतु वर्णन किसी भी कवि का नहीं ठहरता। ये उस कक्षा के कवियों में सर्व प्रधान कवि हैं जिन्होंने शृंगार रस के उद्दीपन सम्बन्धी ऋतु वर्णन की एक स्वतत्र परम्परा का निर्माण किया और मुक्तक काव्य रचना के लिये एक स्वतंत्र विषय निश्चित किया है। आपके षड ऋतु वर्णन में प्रकृति निरीक्षण तथा उसी प्रकार चित्रण करना अत्यन्त प्रशंसनीय है। यह वर्णन सर्वथा अलंकृत तथा आकर्षक है। उसमें अस्वाभाविकता नहीं वरन सरसता एवं मधुरता अधिक है। कल्पना एवं काव्य कला का भी प्रयोग उचित तथा सुन्दर रीति से किया गया है।

कविवर के ऋतुवर्णन में एक बात ध्यान देने योग्य यह है कि वह उद्दीपन के रूप में किया गया है; विशेषकर बारहमासे के अधिकांश कवित्त उद्दीपन विभाव की दृष्टि से ही रचे गये हैं। पर सर्वत्र ऐसा नहीं पाया जाता। कवि ने अपने प्रकृति वर्णन में अपनी प्रतिभा शक्ति का अच्छा प्रदर्शन किया है। इसके उदाहरण इस रत्नावली में देखे जा सकते हैं। आपने ऋतु वर्णन में ऋतुओं के उत्कर्ष को वर्णित करने की यथेष्ट चेष्टा की है और ऐसे वर्णन अलंकार प्रधान हो कर और मनोरंजक हो गये हैं।

इसके अतिरिक्त आपके काव्य का विषय लौकिक तथा धार्मिक भी रहा है। जहाँ तक लौकिक विषय का सम्बन्ध है वहाँ इन्होंने साधारण वस्तु को असाधारण ढंग से इस प्रकार रक्खा है कि इनकी अनोखी सूझ व मौलिकता का अपूर्व परि-परिचय प्राप्त होता है। प्रथम तरंग में श्लेषात्मक छन्दों में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थाती व कवित्त का वर्णन, स्त्री व चौपड़ का वर्णन, स्त्री व मेंहदी का वर्णन, कामिनी व पाग का वर्णन, नायिका व सुनार का वर्णन, कपोल का तिल व तिल्ली का वर्णन, इसी प्रकार अन्य साधारण विषयों के वर्णन उदाहरण स्वरूप लिये जा सकते हैं। इन वस्तुओं के वर्णन बड़े ही असाधारण ढंग से सुन्दर भावों द्वारा व्यक्त करके कवि ने अपनी काव्य कुशलता का अच्छा परिचय दिया है।

इन विषयों के अतिरिक्त कवि ने भक्ति भावना सम्बन्धी भी विषय लिये हैं। यह ध्यान रखने की बात है कि ये किसी भक्ति संप्रदाय के कवि नहीं थे। आपने स्वतंत्र होकर भक्ति संबन्धी पद रचे हैं। फिर भी यदि हम इन्हें किसी भक्त कवि की श्रेणी में स्थान देना चाहें तो गोस्वामीजी की ही कवि परम्परा में रख सकते हैं क्योंकि इन कवि ने भी गोसाईंजी की भाँति रामावतार के लोकोपकारी गुणों का वर्णन विस्तार तथा तन्मयता के साथ किया है। आप श्रीरामचन्द्रजी के उत्कृष्ट भक्त थे यद्यपि अन्य देवों पर भी श्रद्धा थी। वैष्णव भक्तों की भाँति आपकी तीर्थ सेवन तथा गंगा स्नान पर पूरी आस्था थी और इसको बड़ी ही तल्लीनता के साथ प्रकट भी किया है। जीवन की नश्वरता ईश्वर का रक्षा भाव, दैन्य भाव, सगुणोपासना, शिव महिमा, संसार की अनित्यता आदि अनेक भक्ति सम्बन्धी विषयों पर अनेक कवित्तों की पवित्र धारा बहाई है जिसका कि हृदय पर स्वच्छ प्रभाव पड़ता है। गंगाजी का वर्णन आपने १५-१६ छन्दों में भक्ति भावना से प्रेरित होकर सुन्दर एवं बड़े ही मनोहर शब्दों में व्यक्त किया है। आपकी "भक्ति भावना में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हृदय की तल्लीनता है और अनुभूतियों की सच्चाई है। अपनी भक्ति भावना के कारण वे जीवन की उस स्थिति तक पहुंच गये थे जहाँ सांसारिक यातनायें मनुष्य के लिये कोई महत्व नहीं रखती और हृदय शान्त हो जाता है।

वर्णन शैली--इन कविवर जी ने अपनी रचनाओं को उत्कृष्ट बनाने के लिये दो बातों पर विशेष ध्यान रक्खा है। १ अलंकारिकता, २—भावगम्यता। इन्हीं दोनों के आधार पर 'रत्नाकर' की रचना की गई है। कई साहित्याचार्यों के मतानुसार अलंकार में श्लेष का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना गया है। कारण यही है कि यह अलंकार व्यापक रूप से अन्य सभी अलंकारों में किसी न किसी रूप में अवश्य वर्तमान रहता है। श्लेष के द्वारा कवि की अर्थ शक्ति तथा काव्य शक्ति का ज्ञान प्रकट होता है। इसी श्लेष के प्रयोग द्वारा भावगम्यता भी आ जाती है जैसा कि इन कविवरजी ने किया भी है। इन दोनों का वास्तविक संयोग हम इन कविवरजी की रचनाओं के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य भर में नहीं पाते। उदाहरण स्वरूप 'रत्नाकर' का प्रथम तरंग प्रत्यक्ष ही है। आपके उन श्लेषों में कुछ अधिक सरसता पाई जाती है जिनमें ऐसे समता सूचक अलंकारों का मिश्रण हुआ है, जिनके उपमेयों तथा उपमानों में किसी न किसी प्रकार का सादृश्य पाया जाता है। यथा—

सारंग धुनि सुनावै घन रस बरसावै,
मोर मन हरषावै अति अभिराम है।
जोवन अधार बड़ी गरज करनहार,
तपति हरनहार देत मन काम है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सीतल सुभग जाकी छाया जग सेनापति,
पावत अधिक तन मन बिसराम है।
संपै पै संग लीने सनमुख तेरे बरसाऊ,
आयौ घनस्याम सखि मानौ घनस्याम है।

यहाँ मेघ तथा कृष्ण का ही साम्य नहीं है वरन दोनों का लक्ष्य स्थान एक ही है तथा दोनों के क्रिया कलाप भी एक ही हैं। इस प्रकार के अनेक कवित्त प्रथम तरंग में अच्छे से अच्छे वर्तमान हैं। इनमें मस्तिष्क की चतुरता दिखलाने के अतिरिक्त हृदय से भी काम लिया गया है, इसीसे इनमें काफी सरसता तथा स्वाभाविकता भी पाई जाती है। यही कविवर के काव्य की विशेषता है। मस्तिष्क का विषय होते हुए हृदय का भी विषय बना हुआ है। आपने अपने कवित्तों में अभंग पद तथा सभंग पद श्लेषों का प्रयोग सुचारु रूप से किया है परन्तु सभंग पद श्लेष के प्रयोग में अच्छी कुशलता तथा अद्वितीय सफलता प्राप्त हुई है कारण सभग श्लेष लिखने में सहृदयता से काम लिया है। यथा—

सदा नंदी जाकौ आसा कर है विराजमान,
नीकौ घनसार हू तैं बरन है तन कौ।
सैन सुख राखै सुधा दुति जाके सेखर है,
जाके गौरी कीरति जो मथन मदन कौ।
जो है सब भूतन कौ अंतर निवासी रमै,
धरै उर भोगी भेष धरत नगन कौ।
जानि बिन कहैं जानि सेनापति कहैं मानि,
बहुधा उमाधव कौं भेद छाँड़ि मन कौ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंतिम पंक्ति में 'उमाधव' से अर्थ एक पक्ष में शिव का हो जाता है दूसरे पक्ष में 'उमाधव' के 'उ' को 'बहुधा' में लगा कर 'बहुधाउ' माधव कर लेने से विष्णु का अर्थ हो जाता है। इसमें विशेष कठिनाई नहीं पड़ती। कहीं कहीं तो कवि ने स्वयं ही विभिन्न पक्षों को स्पष्ट लिख दिया है—

तारन की जोति जाहि मिले पै विमल होति,
जाके पाइ संग मैं न दीप सरसत है।
भुवन प्रकास उर जानियै ऊरध अध,
सोउ तही मध्य जाके जगतै रहत है।
कामना लहत द्विज कौसिक सरव विधि,
सज्जन भजत महा तम हित रत है।
सेनापति बैन मरजाद कविताई की जु,
हरि, रवि, अरुन तमी कौ वरनत है॥

यहाँ स्पष्ट है कि कवि ने विष्णु, लाल सूर्य तथा रात्रि का वर्णन किया है।

इसके अतिरिक्त आपके श्लिष्ट कवित्तों में एक विशेषता यह भी है कि उनमें प्रथक्-प्रथक् भाव वाले होते हुए तीन-तीन अर्थ तक घटते हुए दिखाई पड़ते हैं। उनके उपमेय तथा उपमान में अन्तर नहीं रह जाता जैसा कि उपर्युक्त कवित्त में दिखलाया गया है।

इनके कुछ श्लिष्ट कवित्तों में एक यह भी विशेषता है कि उनमें समता तथा विषमतासूचक भावों का बड़ा ही सुन्दर निर्वाह हुआ है जो कि अन्यत्र अप्राप्य है। यथा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाहीं नाहीं करै, थोरी माँगे सब दैन कहै,
मंगन को देखि पट देत बार बार हैं।
जिनकों मिलत भली प्रापति की घटी होति,
सदा सब जन मन भाए निरधार है।
भोगी ह्वै रहत बिलसत अवनी के मध्य,
कनकन जोरै, दान पाठ परिवार हैं।
सेनापति वचन की रचना निहारि देखौ,
दाता और सूम दोऊ कीन्हें इक सार हैं॥

इसी प्रकार अनेक उदाहरण कवित्तरत्नाकर में पाये जा सकते हैं जिनमें कि श्लेषालंकार का अद्भुत एवं अनुपम प्रयोग सुन्दरता के साथ हुआ है। इस अलंकार के अतिरिक्त कविवर ने भाषा पर विस्तृत अधिकार होने के कारण अनुप्रास का भी अच्छा प्रयोग किया है—

नीकी मति लेह, रमनी की मति लेह मति,
सेनापति चेत कछू, पाहन अचेत है।
करम करम करि करमन कर पाप,
करम न कर मूढ़, सीस भयौ सेत है।
आवे बनि जतन ज्यौं, रहै बनि जतनन,
पुन्न के बनिज तन मन किन देत है।
आवत विराम! बैस बीती अभिराम तातै,
करि बिसराम भजि रामै किन लेत है॥

चित्रालंकार की भी छटा श्रीरामरसायन के अंत में अच्छी प्रदर्शित की गई है—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रे रे रामा मै रमैं, रोम रोम मै रारि।
रमौ रमा मै रामि मै, मार मार रे मारि ॥

इसके अतिरिक्त सादृश्य मूलक अलकारों में कविवर ने नखशिख वर्णन में प्रतीप का प्रयोग, ऋतु वर्णन में उत्प्रेक्षा का भी अच्छा प्रयोग किया है जिसके कि उदाहरण इस रत्नावली में अन्यत्र देखे जा सकते हैं।

रस परिपाक—सेनापति पर युग का प्रभाव अवश्य पड़ा है। यद्यपि आपने रीति कालीन परिपाटी का अनुसरण नहीं किया है। आपके काव्य में शृङ्गाररस की प्रधानता पाई जाती है परन्तु तत्कालीन कवियों की अपेक्षा इनमें यह विशेषता है कि शृङ्गार की भाँति अन्य रसों (वीर, शान्त, भयानकादि) का भी परिपाक सफलतापूर्वक अपने स्वाभाविक सौन्दर्य वर्णन में मौलिक ढंग से कर दिखलाया है। शृङ्गार रस के आलंबन विभाव नायक-नायिका हैं। आलंबन विभाव के अन्तर्गत कवि ने अपनी रुचि के अनुकूल नायिकाओं के कुछ भेदों को चुन कर कुछ पद अवश्य रचे हैं। मुग्धा, खंडिता, वचन विदग्धा का वर्णन बड़ी ही सुन्दर रीति से अलंकृत भाषा में किया है। परकीया नायिका का वर्णन विशेष रूप से किया है पर स्वकीया के अन्तर्गत 'प्रौढ़ास्वाधीन पतिका' का वर्णन भी सराहनीय है। नायक-नायिका के नख शिख वर्णन भी उद्दीपन विभाव की दृष्टि से किये गये हैं जिनमें उपमानों से सहायता अधिक ली गई हैं। संयोग शृङ्गार के अतिरिक्त कवि ने वियोग शृङ्गार पर भी कवित्त रचे हैं। विरह वर्णन में बिहारी की भाँति कल्पना की लम्बी उड़ान नहीं है वरन स्वाभाविकता ही है। वियोग वर्णन में ऋतु वर्णन की भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहायता उद्दीपन की दृष्टि से ली गई है। यद्यपि आपके वियोग वर्णन में संचारी भावों का विस्तृत वर्णन नहीं है तथापि जो भी भाव आपने उठाया है उसे बड़ी ही सफलता के साथ सरल एवं स्वाभाविक ढंग से निबाहा है यथा—

कौनें विरमाये, कित छाये, अजहूँ न आए,
कैसे सुधि पाऊँ प्यारे मदनगुपाल की।
लोचन जुगल मेरे तादिन सफल ह्वै हैं,
जा दिन बदन छबि देखौं नंदलाल की॥
सेनापति जीवन अधार गिरिधर बिन,
और कौन हरै बलि बिथा मो बिहाल की।
इतनी कहत, आँसू बहत फरकि उठी,
लहर लहर दृग बाँईं ब्रज बाल की।

यहाँ बाँईं आँख फड़कने के अन्तर्गत कितना रहस्य छिपा हुआ है जिससे कि हर्षसूचक भाव की सुन्दर व्यञ्जना की गई है।

शृङ्गार रस के बाद कवि ने वीररस का भी यथेष्ट रूप से प्रयोग किया है। कवि को उत्साहपूर्ण जीवन से विशेष अभि-रुचि थी प्रमाण स्वरूप कवि ने 'रामायण वर्णन में' श्रीराम के वीर चरित्रों का ही विशेष वर्णन किया है। सीता स्वयम्वर, परशुराम मिलन, मारीच वध, हनुमान का लंका प्रवेश, सेतुबन्ध, अंगद रावण संवाद, राम रावण युद्धादि ही वीर स्थलों को लिया है जो कि वीर प्रधान अंश हैं। भरत चरित्र, भरत मिलाप, दशरथ मृत्यु आदि स्थलों को नहीं लिया। कारण यही हो सकता है कि कवि पर इसका प्रभाव न पड़ा हो। वीर रस के अन्तर्गत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

युद्ध वर्णन में कवि ने युद्ध का ही वर्णन न करके युद्ध की तैयारी को ही बड़ी विशदता के साथ वर्णित किया है और इसमें वीर रस का अच्छा परिपाक भी हुआ है। साथ ही साथ आपके युद्ध सम्बन्धी वर्णन चित्र सा उपस्थित कर देते हैं इस प्रकार वीर रस के परिपाक में भी कवि ने अच्छी सफलता पाई है।

वीर रस के पश्चात् कवि ने दो तीन जगह भयानक रस का भी चित्रण किया है। एक तो धनुंभंग के स्थल पर हुआ है यथा—

हहरि गयौ हरि हिए, धधकि धीरत्तन मुक्किय।
ध्रुव नरिंद थरहर्यौ, मेरु धरनी धसि धुक्किय॥
अक्खि पिक्खि नहिं सकइ, सेस नक्खिन लग्गिय तल।
सेनापति जय सद्द, सिद्ध उच्चरत बुद्धि बल॥
उद्दंड चंड भुजदंड भरि, धनुष राम करषत प्रबल।
टुट्टिय पिनाक निर्घात सुनि, लुट्टिय दिगंत दिग्गज बिकल॥

इस प्रकार शान्त रस के भी अनेकों कवित्त उदाहरण स्वरूप इस रत्नावली में देखे जा सकते हैं। वीर रस की भाँति कवि को शान्त रस के भी परिपाक में अपूर्व सफलता मिली है।

भाषा—कवि ने ब्रज भाषा का ही प्रयोग किया है यद्यपि यत्र तत्र संस्कृत तथा अन्य भाषा के भी शब्द एवं पद आ गये हैं। इसीसे काव्य में माधुर्य और प्रसाद गुण प्रधान हो गये हैं। भाषा भाव के अनुकूल हो गई हैं। जान पड़ता है कि कवि को भाषा पर विस्तृत अधिकार है, ऐसी सुन्दर, सरस और सुव्यवस्थित भाषा बहुत ही थोड़े कवियों की पाई जाती है। इनकी भाषा में बहुत कुछ माधुर्य ब्रजभाषा का ही है। संस्कृत पदावली पर आश्रित नहीं। अनुप्रास और यमकालंकारादि की अधि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कत। होते हुए भी भाषा की सजीवता तथा स्वाभाविकता विगड़ने नहीं पाई है।

ओजपूर्ण भाषा लिखने में भी कवि हस्तकुशल है। इस प्रकार के भाषा प्रयोग में आपने वर्णों के द्वित्व रूपों का सहारा लिया है—अक्खि, पिक्खि, वित्ति, बुल्लिय इत्यादि पर ऐसे पद छन्द ही में प्रयुक्त हुए हैं न कि कवित्त में।

इस प्रकार कवि की भाषा में तीनों गुण यथेष्ट रूप से वर्तमान हैं जिससे भाषा सजीव ही बनी हुई है। आप में केशव की भाँति शब्दों की कट्टरता तथा भावों की दुरूहता नहीं बल्कि शब्दों एवं भावों का सुन्दर एवं अनुपमेय सामञ्जस्य है। शब्द सरल एवं सुबोध हैं। तद्भव का विशेष प्रयोग है। इस प्रकार कवि की भाषा सुव्यवस्थित एवं परिमार्जित है।

इन कविवर के विषय में एक विशेष बात ध्यान देने की यह है कि इन्होंने केवल घनाक्षरी या कवित्त ही में अपनी सारी रचना की है। कारण इसका यही था कि अन्य छन्दों में उनका पूरा नाम सुन्दरता, सरलता एवं सफलता के साथ न आता था तथा दूसरे कवियों से अपने छन्दों को चोरी से बचाने के लिये अपना नाम प्रत्येक कवित्त में अवश्य रखना चाहते थे। ऐसा अनुमान भी है कि 'सेनापति' उनका उपनाम ही था।

उपर्युक्त कथन से यही निष्कर्ष निकलता है कि अर्थ गाम्भीर्य के विचार से इन कवि का स्थान विहारी व मतिराम से बढ़कर होना चाहिये जैसा कि आपके श्लिष्ट पदों से प्रगट होता है। इसके अतिरिक्त काव्य कला की दृष्टि से भी आपका स्थान विहारी व मतिराम से ऊँचा ठहरता है क्योंकि अलंकारों का, विशेषकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

२

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्लेषालंकार का ऐसा अपूर्व प्रयोग उदाहरण स्वरूप हिन्दी-साहित्य भर में खोजने से नहीं मिलेगा। आपने मुक्तक छन्दों की रचना करके उसमें भी अपनी अद्भुत प्रतिभा एवं काव्य कला प्रदर्शित की है और इसमें अपूर्व सफलता भी मिली है। यद्यपि आचार्य केशव ने भी एकाक्षरी लिखी है परन्तु आचार्य के पद श्लिष्ट होने के कारण लोकप्रिय नहीं हो सके। इन कवि के पद प्रसाद गुण पूर्ण होने से अधिक हृदयग्राही हुए है। इस प्रकार विचार करने से हम कह सकते हैं कि कविवर सेनापति एक श्रेष्ठ श्रेणी के कवि हैं और इनका स्थान हिन्दी-साहित्य में मेरी राय में वही होना चाहिये जो कि बिहारी मतिराम आदि का है। यह भी जल्दी ही आशा की जाती है कि इनके दूसरे काव्य ग्रंथ 'काव्य कल्पद्रुम' के प्राप्त हो जाने पर इनकी महत्ता और भी प्रकट होगी और हिन्दी साहित्य में श्रेष्ठ स्थान पर अवश्य सुशोभित होंगे। इति।

दारागञ्ज–प्रयाग
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
सं० १९९८

१२—८—४१
शेषनारायण शोकहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सेनापति-रत्नावली

प्रथम सोपान

ऋतु वर्णन

बरन बरन फूले सब उपबन बन,
सोई चतुरंग संग दल लहियत है ।
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं,
गुंजत मधुप गान गुन गहियत है ॥
आवै आस-पास पुहुपन की सुबास सोई,
सोंधे के सुगंध माँझ सने रहियत है ।
सोभा कौ समाज, सेनापति सुख-साज आज,
आवत बसंत रितुराज कहियत है ॥

(२)

मलय समीर सुभ सौरभ धरन धीर,
सरवर नीर जन मज्जन के काज के ।
मधुकर पुंज पुनि मंजुल करत गुंज,
सुधरत कुंज सम सदन समाज के ॥
व्याकुल बियोगी, जोग कै सकै न जोगी तहाँ,
बिहरत भोगी सेनापति सुख साज के ।

बरन बरन—रंग विरंगे । बंदी—भाट । पुहुपन—फूल । समीर—पवन । सरवर—तालाब ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सघन तरु लसत, बोलैं पिक कुल सत,
देखौ हिय हुलसत आए रितुराज के ॥

(३)

लसत कुटज, घन चंपक, पलास, बन,
फूलीं सब साखा जे हरति जन चित्त हैं।
सेत, पीत, लाल, फूल-जाल हैं बिसाल, तहाँ
आछे अलि अछर, जे कारज के मित्त हैं॥
सेनापति माधव महीना भरि नेम करि,
बैठे द्विज कोकिल करत घोष नित्त हैं।
कागद रंगीन मैं प्रबीन हैं बसंत लिखे,
मानौं काम-चक्कवै के बिक्रम कबित्त हैं ॥

(४)

लाल लाल टेसू फूलि रहे हैं बिसाल, संग
स्याम रंग भेंटि मानौं मसि मैं मिलाए हैं।
तहाँ मधु काज आइ बैठे मधुकर-पुंज,
मलय पवन उपबन बन धाए हैं ॥
सेनापति माधव महीना मैं पलास तरु,
देखि देखि भाउ कबिता के मन आए हैं।
आधे अन-सुलगि, सुलगि रहे आधे, मानौ
बिरही दहन काम क्वैला परचाए हैं॥

सेत—सफ़ेद। अछर—अक्षर। प्रवीन—चतुर। मसि—स्याही।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५)

केतकि, असोक, नव चंपक, बकुल कुल,
कौन धौ बियोगिनी कौं ऐसौ बिकराल है।
सेनापति साँवरे की, सूरति की सुरति की,
सुरति कराइ करि डारत बिहाल है॥
दछिन-पवन एती ताहू की दवन जऊ,
सूनौ है भवन परदेस प्यारौ लाल है।
लाल हैं प्रबाल फूले देखत बिसाल, जऊ
फूले और साल पै रसाल उर साल है॥

(६)

सरस सुधारी राज-मंदिर मैं फूलवारी,
मोर करैं सोर, गान कोकिल विराव के।
सेनापति सुखद समीर है, सुगंध मंद,
हरत सुरत-स्रम-सीकर सुभाव के॥
प्यारौ अनुकूल, कौहू करत करन-फूल,
कौहू सीसफूल, पाँवड़ेऊ मृदु पाँव के।
चैत मैं प्रभात, साथ प्यारी अलसात, लाल
जात मुसकात, फूल बीनत गुलाब के॥

बकुल—मौलिसिरी। सुरति—याद। विहाल—विकल। रसाल—आम। सुरत-सम-सीकर सुभाव के—रति के परिश्रम से उत्पन्न पसीने की बूंदें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७)

धर्यौ है रसाल मौर सरस सिरस रुचि,
ऊँचे सब कुल मिले गनत न अंत है।
सुचि है अवनि बारी भयौ लाज होम तहाँ,
भौंरी देखि होत अलि आनँद अनंत है॥
नीकी अगवानी होत सुख जनवासौ सब,
सजी तेल ताई चैन मैंन मयमंत है।
सेनापति धुनि द्विज साखा उच्चरत देखौ
बनी दुलहिन बना दूलह बसंत है॥

(८)

तरु नीके फूले बिबिध, देखि भए मयमंत।
परे बिरह बस काम के, लागे सरस बसंत॥
लागे सरस बसंत, सघन उपबन बन राजत।
कोकिल के कल गीत, मधुर सेनापति साजत॥
तजे सकुच के भाउ, भाउ तजि मान मनी के।
सुर, नर, मुनि, सुख संग रंग राचैं तरुनी के॥

मौर—मुकुट। अगवानी—स्वागत। मैन—कामदेव। मयमंत—मतवाले। तरुनी—युवती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(९)

दच्छिन धीर समीर पुनि, कोकिल कल कूजंत।
कुसुमित साल रसाल जुत, जो बन सोभावंत ॥
जोबन सोभावंत, कंत-कामिनि मनोज बस।
सेनापति मधु मास, देखि बिलसत प्रमोद रस ॥
दरस हेत तिय लिखति, पीय सियरावहु अच्छिन।
हरहु हीय संताप, आइ हिलि मिलि सुख दच्छिन ॥

(१०)

जेठ नजिकाने सुधरत खसखाने, तल
ताख तहखाने के सुधारि झारियत हैं।
होति है मरम्मति बिबिध जल जंत्रन की,
ऊँचे ऊँचे अटा, ते सुधा सुधारियत हैं ॥
सेनापति अतर, गुलाब, अरगजा साजि,
सार तार हार मोल लै लै धारियत हैं।
ग्रीषम के बासर बराइबे कौं सीरे सब,
राज-भोग काज साज यौं सम्हारियत हैं ॥

सोभावंत—सुन्दर प्रतीत होते हैं। मनोज—कामदेव।
सियरावहु—सन्तुष्ट हो। नजिकाने—समीप आये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(११)

बृष कौ तरनि तेज सहसौ किरन करि,
ज्वालन के जाल बिकराल बरसत है।
तचति धरनि, जग जरत झरनि, सीरी
छाँह कौं पकरि पंथी-पंछी बिरमत है॥
सेनापति नैक दुपहरो के ढरत, होत
धमका बिषम, ज्यौं न पात खरकत है।
मेरे जान पौनैं सीरी ठौर कौं पकरि कौंनैं,
घरी एक बैठि कहूं घामै बितवत है॥

(१२)

सेनापति ऊँचे दिनकर के चलति लुवैं,
नद, नदी, कुवैं कोपि डारत सुखाइ कै।
चलत पवन, मुरझात उपबन वन,
लाग्यौ है तवन, डार्यौ भूतलौ तचाइ कै॥
भीषम तपत रितु ग्रीषम सकुचि तातैं,
सीरक छिपो है तहखानन मैं जाइ कै।
मानैं सीत काल, सीत-लता के जमाइबे कौं,
राखे हैं बिरंचि बीज धरा मैं धराइ कै॥

तरनि—सूर्य। तचति—तपता है। लुवैं—लू।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१३)

प्रात नृप न्हात, करि असन बसन गात,
पैंधि सभा जात जौ लौं बासर सुहात है।
पीछे अलसाने, प्यारी संग सुख साने,
बिहरत खसखाने, जब घाम नियरात है॥
लागे हैं कपाट, सेनापति रंग-मंदिर के,
परदा परे, न खरकत कहूँ पात है।
कोई न भनक, ह्वै कै चनक-मनक रही,
जेठ की दुपहरी कि मानों अधरात है॥

(१४)

काम कै प्रथम जाम, बिहरैं उसीर धाम,
साहिब सहित बाम, घाम बितवत हैं।
नैंक होत साँझ, जाइ बैठत सभा के माँझ,
भूषन बसन फेरि और पहिरत हैं॥
ग्रीषम की बासर बड़ाई बरनी न जाइ,
सेनापति कवि कहिबे कौं उमहत हैं।
सोइ जागे जानैं दिन दूसरौ भयौ है, बातैं
काल्हि की सी करी भोरैं भोर की कहत हैं।

कपाट—किवाड़। उमहत—उत्साहित होना। भोर—सबेरा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१५)

सेनापति तपन तपति उतपति तैसौ,
छायौ उत पति, तातें बिरह बरत है।
लुवन की लपटैं, ते चहूं ओर लपटैं पै,
ओढ़े सलिल पटैं न चैन उपजत है।
गगन गरद धूंधि, दसौ दिसा रही रूँधि,
मानौ नभ भार की भसम बरसत है।
बरनि बताई छिति व्योम की तताई, जेठ
आयौ आततताई पुट पाक सौ करत है॥

(१६)

तपै इत जेठ, जग जात है जरनि जर्‌यौ,
ताप की तरनि मानौं मरनि करत है।
इतहिं असाढ़ उठै नूतन सघन घटा,
सीतल समीर हिय धीरज धरत है।
आधे अंग ज्वालन के जाल बिकराल आधे,
सीतल सुभग मोद हीतल भरत है।
सेनापति ग्रीषम तपत रितु भीषम है,
मानौ बड़वान सौं बारिधि बरत है॥

उतपति—जन्म। सलिल—जल। धूंधि—छाई हुई। छिति—पृथ्वी। हीतल—हृदय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१७)

सुंदर बिराजैं राज-मंदिर सरस ताके,
    बीच सुख दैनी सैनी सीरक उसीर की।
उछरैं सलिल, जल जंत्र ह्वै विमल उठैं,
    सीतल सुगंध मंद लहर समीर की।
भीने हैं गुलाब तन सने हैं अरगजा सौं,
    छिरकी पटीरनीर टाटी तीर तीर की।
ऐसे बिहरत दिन ग्रीषम के बितवत,
    सेनापति दंपति मया तैं रघुबीर की॥

(१८)

देखैं छिति अंबर जलै है चारि ओर छोर,
    तिन तरवर सब ही कौ रूप हर्यौ है।
महा झर लागै जोति भादव की होति चलै,
    जलद पवन तन सेक मनौं पर्यौ है।
दारुन तरनि तरैं नदी सुख पावैं सब,
    सीरी घन छाँह चाहिबौई चित धार्यौ है।
देखौ चतुराई सेनापति कविताई की जु,
    ग्रीषम विषम बरषा की सम कर्यौ है॥

सैनी सीरक उसीर की—ठंडी खस की टट्टियाँ। पटीर—चन्दन की एक जाति।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१९)

रजनी के समै बिन सीरक न सोयौ जात,
प्यारी तन सुथरी निपट सुखदाई है।
रगित सुवास राखैं भूपति रुचिर साल,
सूरज की तपति किरनि तन ताई है।
सीतल अधिक यातैं चंदन सुहात परै,
आँगन ही कल ज्यौं त्यौं अगिनि बराई है।
ग्रीषम की रितु हिम रितु दोऊ सेनापति,
लीजियै समुझि एक भाँति सी बनाई है॥

(२०)

छूटत फुहारे सोई बरसा सरस रितु,
और सुखदाई है सरद छिरकाइ की।
हेमंत सिसिर हूं तैं सीरे खसखाने, जहाँ
छिन रहैं तपति मिटति सब काइ की।
फूलै तरवर, फूलवारी फूल सौं भरत,
सेनापति सोभा सो बसंत के सुभाइ की।
ग्रीषम के समय साँझ, राज महलन माँझ,
पैयति है सोभा षट-रितु समुदाइ की॥

अगिनि—आग। सीरे—ठंडे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२१)

ग्रीषम तपति हर, प्यारे नव जलधर,
सेनापति सुखकर जे हैं दपतीन कौं।
भुव तरवर जीव सजत सकल घर,
धरत कदम तरु कोमल कलीन कौं।
सुनि घनघोर, मोर कूकि उठे चहूं ओर,
दादुर करत सोर भोर जामिनीन कौं।
काम धरे बाढ़ तरवारि, तीर जम डाढ,
आवत असाढ़ परी गाढ़ बिरहीन कौं॥

(२२)

सुधा के भवन उपवन बीच छूटै नल,
सलिल सरल धार तातैं निकरत हैं।
ऊरध गमन वारि ताकी छबि कौं निहारि,
सेनापति कछू बरनन कौं करत है॥
मांति कोऊ तरु बिन सींच्यौ रहि गयौ होइ,
ताहि फेरि सीचौं यह जीय मैं धरत है।
यातैं मानौं जल, जल जंत्र के कपट करि,
बाग देखिबे कौं ऊपर कौं उछरत हैं॥

कदम तरु—कदंब का पेड़। धरे बाढ़—धार पैनी करना।
ऊरध—ऊँचा। वारि—जल। छवि—शोभा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२३)

पवन परम तातौ लगत, सहि नहिं सकत सरीर
बरसत रवि सहसौ किरनि, अवनि तपनि के तीर।
अवनि तपनि के तीर, नीर मज्जन सीतल तन
सेनापति रति करति, नारि धर मुकता भूषन।
भूषन मंदिर वास, सकल सूकत-सरिता गन
पात पात मुरझात जात बेली बन उपबन।

(२४)

वृष चढ़ि महा भूतपति ज्यौं तपति अति,
सुखवत सिंधु सब सरबर सोत है।
धनुष कौं पाइ खग तीर सौं चलत, मानौं,
ह्वै रही रजनि दिन पावत न पोत है॥
सेनापति उकति जुझाते सुभ-गति, मति,
रीझत सुनत कवि कोविद कौ गोत है।
यातैं जानी जाति जिय जेठ मैं सहस कर,
दिनकर पूस मैं सहस-पाइ होत है॥

तातौ—गरम। मज्जन—नहाना। वृष—बैल या वृष राशि। भूतपति—महादेवजी। खग—पत्ती, सूर्य। पोत—पार, जहाज पारी। सहसकर—सूर्य।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२५)

आई रितु पाउस कृपा अस न कीनी कंत,
छाइ रह्यौ अंत, उर बिरह दहत है।
गरजत घन तरजत है मदन लर,
जत तन-मन नीर नैननि बहत है॥
अंग-अंग भंग, बोलै चातक बिहँग प्रान,
सेनापति स्याम संग रंगहिं चहत है।
धुनि सुनि कोकिल की बिरहिनि को किलकी,
केका के सुने तैं प्रान एकाके रहत है॥

(२६)

दामिनी दमक, सुर चाप की चमक, स्याम,
घटा की भमक अति घोर घनघोर तैं।
कोकिला, कलापी, कल कूजत हैं जित-जित,
सीकर ते सीतल समीर की भकोर तैं॥
सेनापति आवन कह्यौ है मन भावन, सु,
लाग्यौ तरसावन बिरह-जुर जोर तैं
आयौ सखी सावन, मदन सरसावन,
लग्यौ है बरसावन सलिल चहूं ओर तैं॥

पाउस—वर्षा ऋतु। किलकी—बेचैनी। सुरचाप—वज्र
केका-मोर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२७)

दामिनी दमक सोई मंद बिहँसनि,
बगमाल है बिसाल सोई मोतिन कौ हारौ है।
बरन बरन घन रंगित बसन तन,
गरज गरूर सोई बाजत नगारौ है॥
सेनापति सावन कौं बरसा नवल बधू,
मानौ है बरति साजि सकल सिंगारौ हैं।
त्रिबिधि बरन पर्‌यौ इन्द्र कौ धनुष लाल,
पन्ना सों जटित मानौ हेम खगवारौ है॥

(२८)

दूरि जदुराई सेनापति सुखदाई देखौ,
आई रितु पाउस न पाई प्रेम पतियाँ।
धरि जलधर की सुनत धुनि धरकी है,
घर की सोहागिल छोह भरी छतियाँ॥
आई सुधि बर की, हिये में आनि खरकी,
"तू मेरी प्रान प्यारी" यह पीतम की बतियाँ।
बीती अवधि आवन की लाल मन भावन की,
डग भई बावन की सावन की रतियाँ॥

बगमाल—बगों की माला। खगवारौ—गले में पहनने का भूषण विशेष। प्रेम पतियाँ—प्रेम पत्रिकाएँ। दरकी—विदीर्ण हुई। छोह—दुःख। औधि—अवधि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२९)

गगन अँगन घनाघन तें सघन तम,
सेनापति नैक हू न नैन मटकत हैं।
दीप की दमक जीगनानि की झमक छाँड़ि,
चपला चमक और सोनौ अटकत हैं॥
रवि गयौ दबि मानौ ससि सोऊ धसि गयौ,
तारे तोरि डारे से न कहूं फटकत हैं।
मानौ महा तिमिर तैं भूलि गई बाट,
तातें रवि ससि तारे कहूँ भूले भटकत हैं॥

(३०)

नीके हौ निठुर कंत मन लै पधारे अंत,
मैन मयमंत कैसे बासर बराइहौं।
आसरौ अवधि कौ सो अवध्यौ बितीत भई,
दिन दिन पीत भई रही मुरझाय हौं॥
सेनापति प्रानपति साँची हौं कहति एक,
पाइ कै तिहारे पाँइ प्रानन कै पाइ हौं।
इकली डरी हौं धनु देख कै डरी हौं खाइ,
बिष की डरी हौं घनस्याम मरि जाइ हौं॥

गगन अँगन—आकाश प्रांगण। घनाघन—बरसने वाले बादल। जीगनान—जुगनू। मयमंत—मदमत्त। बासर—दिन। आसरो—भरोसा। पीत—पीला।

 CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३१)

सेनापति उनये नये जलद सावन के,
चारि हू दिसानि घुमरत भरे तोइ कै।
सोभा सरसाने न बखाने जात काहू भाँत्ति,
आने हैं पहार मानो काजर के ढोइ कै॥
घन सों गगन छयौ तिमिर सघन भयौ,
देखि न परत मानो रवि गयौ खोइ कै।
चारि मास भरि स्याम निसा के भरम मानि,
मेरे जानि याही तें रहत हरि सोइ कै॥

(३२)

उन एते दिन लाये सखी अजहूँ न आये,
उनए ते मेह भारी काजर पहार से।
काम के बसीकरन डारें अब सीकरन,
तातै ते समीर जे हैं सीतल तुसार से।
सेनापति स्याम जू कौं बिरह छहरि रह्यौ,
फूल प्रतिकूल तन डारत पजार से।
मोर हरषन लागे घन बरसन लागे,
बिन बर खन लागे बरष हजार से॥

उनए—घिर आए। तोइ—जल। भरम—धोखा। सीकरन—बूंदें। तुसार—पाला। छहरि—बिखर जाना। पजार—जला देना। खन—क्षण।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३३)

अब आयौ भादौं मेह बरसै सघन कादौं,
सेनापति जादौपति बिन क्यों बिहात है।
रवि गयौ दबि, छबि अंजन तिमिर भयौ,
भेद निसि दिन कौ न क्यों हू जान्यौ जात है।
होति चकचौंधी जोति चपला के चमके तैं,
सूझि न परत पीछे मानौं अधरात है।
काजर तैं कारौ अँधियारौ भारौ गगन मैं,
घुमरि घुमरि घन घोर घहरात है॥

(३४)

सारँग धुनि सुनावै घन रस बरसावै,
मोर मन हरषावै अति अभिराम है।
जीवन अधार बड़ी गरज करन हार,
तपति हरनहार देत मन काम है॥
सीतल सुभग जाकी छाया जग सेनापति,
पावत अधिक तन मन बिसराम है।
संपै संग लीने सनमुख तेरे बरसाऊ,
आयौ घनस्याम सखि मानौ घनस्याम है॥

चपला—बिजली। घन रस—खूब पानी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३५)

बरसत घन, गरजत सघन, दामिनि दिपै अकास।
तपति हरी, सफलौ करी, सब जीवन की आस॥
सब जीवन की आस, पास नूतन तिन अनगन।
सोर करत पिक मोर, रटत चातक बिहंग गन॥
गगन छिपे रबि चंद, हरष सेनापति सरसत।
उमगि चले नद-नदी, सलिल पूरन सर बरसत॥

(३६)

सारँग धुनि सुनि पीय की, सुधि आवति अनुहारि।
तजि धीरज, बिरहिनि बिकल, सबै रहैं मनुहारि॥
सबै रहैं मनुहारि, जे न मानैं जुवती गन।
ते आपुन तैं जाइ धाइ भेंटत प्रीतम तन॥
मत न मान के चलहिं, देखि जलधर चपला रंग।
सेनापति अति मुदित देखि बासरै निसा रंग।

दिपै—शोभित है। आस—आशा। अनगन—अगणित। सारंग—मेघ, पपीहा। अनुहारि—आकृति। बासरै—दिन में।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३७)

पाउस निकास तातैं पायौ अवकास भयौ,
जोन्ह कौं प्रकास, सोभा ससि रमनीय कौं।
बिमल अकास, होत बारिज बिकास,
सेनापति फूले कास हित हंसन के हीय कौं॥
छिति न गरद, मानौ रंगे हैं हरद सालि,
सोहत जरद को मिलावै हरि पीय कौं।
मत्त है दुरद, मिट्यौ खंजन दरद रितु,
आई है सरद सुखदाई सब जीय कौं॥

(३८)

खंड खंड सब दिग-मंडल जलद सेत,
सेनापति मानौं सृंग फटकि पहार के।
अंबर अडंबर सों उमड़ि घुमड़ि छिन,
छिछकैं छछारे छिति अधिक उछार के॥
सलिल सहल मानौं सुधा के महल नभ,
तूल के पहल किधौं पवन अधार के।
पूरब कौं भाजत हैं, रजत से राजत हैं,
गग गग गाजत गगन घन क्वार के॥

पाउस—वर्षा। निकास—समाप्ति। जोन्ह—जुन्हैया, चाँदनी। सालि—जड़हन। दुरद—हाथी। सृंग—चोटी। छिछकैं—छिड़कैं। तूल—रुई। रजत—चाँदी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३९)

बिबिधि बरन सुर चाप के न देखियत,
मानौं मनि भूषन उतारिबे के भेस हैं।
उन्नत पयोधर बरस रिसि गिरि रहे,
नीके न लगत फीके सोभा के न लेस हैं॥
सेनापति आए तैं सरद रितु फूलि रहै,
आस पास कास खेत खेत चहूं देस हैं।
जोबन हरन कुंभ, जोनि उदए तैं भई,
बरसा बिरध ताके सेत मानौं केस हैं॥

(४०)

कातिक की राति थोरी थोरी सियराति, सेना
पति है सुहाति सुखी जीवन के गन हैं।
फूले हैं कुमुद, फूली मालती सघन बन,
फूलि रहे तारे मानौं मोती अनगन हैं॥
उदित बिमल चंद, चांदिनी छिटकि रही,
राम कैसौ जस अध ऊरध गगन हैं।
तिमिर हरन भयौ, सेत है बरन सब,
मानहु जगत छीर सागर मगन हैं॥

सुर चाप—इन्द्र धनुष। पयोध—बादल। कुंभजोनि—अगस्त नक्षत्र। कास—काँसा। मगन—प्रसन्न।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४१)

बरन्यौ कवि न कलाधर कौं कलंक तैसौ,
को सकै बरनि, कबि हू की मति छीनी है।
सेनापति बरनी अपूरब जुगति ताहि,
कोबिद बिचारौ कौन भाँति बुद्धि दीनी है॥
मेरे जान जेतिक सौ सोभा होत जानी राखि,
तेतिकै कलान रजनी की छबि कीनी है।
बढ़ती के राखे रैनि हू तैं दिन ह्वै है, यातें
आगरी मयंक तैं कला निकासि लीनी है॥

(४२)

सरसी निरमल नीर पुनि चंद चाँदिनी पीन।
घन बरसै आकास अरु अवनी रज है लीन॥
अब नोरज है लीन, बिमल तारागन सोभा।
राजहंस पुनि लीन, सकल हिमकर की जो भा॥
इत सरवर, उत गगन दुहूं, समता है परसी।
सेनापति रितु सरद, अंग अंगन छबि सरसी॥

कलाधर—चन्द्रमा। छीनी—नष्ट हुई। आगरी—भंडार। सरसी—सरोवरों का। पीन—शोभायुक्त। अवनी रज—धूल भा—प्रकाश। परसी—छू गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४३)

प्रात उठि आइबे कौं, तेलहि लगाइबे कौं,
मलिमलि न्हाइबे कौं गरम हमाम है ।
ओढ़िबे कौं साल, जे बिसाल हैं अनेक रंग,
बैठिबे कौं सभा, जहाँ सूरज कौ घाम है ॥
धूप कौ अगर, सेनापति सोंधौ सौरभ कौं,
सुख करिबे कौं छिति अंतर कौ धाम है ।
आए अगहन, हिम पवन चलन लागे,
ऐसे प्रभु लोगन कौं होत बिसराम है ॥

(४४)

सूरै तजि भाजी, बात कातिक मैं जब सुनी,
हिम की हिमाचल तैं चमू उतरति है ।
आए अगहन, कीने गहन दहन हू कौं,
तित हू तैं चली, कहूं धीर न धरति है ॥
हिय मैं परी है हूल दौरि गहि, तजीं तूल,
अब निज मूल सेनापति सुमिरति है ।
पूस मैं त्रिया के ऊँचे कुच-कनकाचल में,
गढ़वै गरम भई, सीत लौं लरति है ॥

हिम—बरफ़ । बिसराम—आराम । चमू—सेना । हूल—पीड़ा ।

12497

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४५)

सीत कौ प्रबल सेनापति कोपि चढ़्यौ दल,
निबल अनल, गयौ सूर सियराइ कै ।
हिम के समीर, तेई बरसैं बिषम तीर,
रही है गरम भौन कौनन मैं जाइ कै ॥
धूम नैन बहैं, लोग आगि पर गिरे रहैं,
हिये सौं लगाइ रहैं नैक सुलगाइ कै ।
मानौं भीत जानि, महा सीत तैं पसारि पानि,
छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै ॥

(४६)

आयौ सखी पूसौ, फूलि कंत सौं न रूसौ, केलि
ही सौं मन मूसौ जीउ ज्यों सुख लहत है ।
दिन की घटाई, रजनी की अघटाई, सीत
ताई हू कौं सेनापति बरनि कहत है ॥
याही तैं निदान प्रान बेगि दै न होत होत,
द्रौपदी के चीर कैसौ राति कौ महत है ।
मेरे जान सूरज पताल तप ताल माँझ,
सीत कौ सतायौ कहलाइ कैं रहत है ॥

अनल—अग्नि । रूसो—रूठो । मूसौ—ठगौ । घटाई—कम होना । कहलाइ—पीड़ित होकर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४७)

पूस के महीना काम बेदना सही ना जाय,
भोग हो के द्यौस निसि बिरह अधीन के।
भोर ही कौ सीत सो न पावत छुटन त्योंही,
राति आइ जाति है, दुखित गन दीन के।
दिन की नन्हाई सेनापति बरनी न जाइ,
रंचक जनाई मन आवै परबीन के।
दामिनी ज्यौं भानु ऐसे जात है चमकि ज्यों न,
फूलन हू पावत सरोज सरसीन के॥

(४८)

बरसै तुसार बहै सीतल समीर नीर,
कंपमान उर क्यों हू धीर न धरत है।
राति न सिराति सरसाति बिथा बिरह की,
मदन अराति जोर जोबन करत है॥
सेनापति स्याम हम धन हैं तिहारी हमैं,
मिलौ, बिन मिले, सोत पार न परत है।
और की कहा है, सबिता हू सीत रितु जानि,
सीत कौ सतायौ धन रासि मैं परत है॥

द्यौस—दिन। नन्हाई—छोटापन। अराति—बैरी। धन—धन राशि या युवती। सबिता—सूर्य।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४९)

मारग सीरष पूस मैं सीत हरन उपचार ।
नीर समीरन तीर सम, जनमत सरस तुसार ॥
जन-मत सरसतु सार, यहै रमनी सँग रहियै ।
कीजै जोबन भोग, जनम जीवन फल लहियै ॥
तपन, तूल, तंबूल, अनल अनुकूल होत जग ।
सेनापति धन सदन बास, न बिदेस, न मारग ॥

(५०)

सिसिर मैं ससि कौ सरूप पावै सबिता हू,
दामिनी की द्युति धाम हू मैं दमकति है।
सेनापति होत है सीतलता सहसगुनी,
रजनी की झांईं बासर मैं झमकति है ॥
चाहत चकोर, सूर ओर दृग-छोर करि,
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है ।
चंद के भरम होत मोद है कमोदिनी कौं,
ससि संक पंकजिनी फूलि न सकति है ॥

मारग सीरष—अगहन । तपन, तूल, तंबूल, अनल अनुकूल होत जग—जाड़ों में धूप, रुई, पान और अग्नि ही के सेवन से आराम मिलता है । झाँईं—प्रतीत होना ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५१)

सिसिर तुषार के बुखार से उखारत है,
पूस बीते होत सून हाथ पाय ठिरि कै।
द्यौस की छुटाई की बड़ाई बरनी न जाय,
सेनापति पाई कछु सोचि कै सुमिरि कै॥
सीत तैं सहस-कर सहस-चरन ह्वै कै,
ऐसे जात भाजि तम आवत है घिरि कै।
जौ लौं कोक कोकी को मिलत तौ लौं होति राति,
कोक अधबीच ही तैं आवत है फिरि कै।

(५२)

अब आयौ माह प्यारे लागत है नाह, रवि,
करत न दाह जैसौ अवरेखियत है।
जानियै न जात बात कहत बिलात दिन,
दिन सौं न तातैं तन को बिसेखियत है॥
कलप सी राति, सो तो सोये न सिराति क्यों हूं,
सोइ सोइ जागे पै न प्रात पेखियत है।
सेनापति मेरे जान दिन हू ते राति भई,
दिन मेरे जान सपने पै देखियत है॥

बुखार—गरमी। ठिरि कै—ठिठुर कर। सहसकर—सूर्य। कल्प—कल्प, ब्रह्मा का एक दिन। पेखियत—दिखलाई पड़ना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५३)

कब दिन दूलह के अरुन बरन पाइ,
पाइहौं सुभग जिन्हैं पाइ पीर जाति है।
ऐसे मनोरथ, माह मास की रजनि, जिनि,
ध्यान सौं गँवाई, आन प्रीति न सुहाति है॥
सेनापति ऐसी पदमिनी कौं दिखाई नैंक,
दूरि ही तैं देकै, जात होत इहि भाँति है।
कछु मन फूली रही, कछु अन-फूली, जैसे,
तन मन फूलिबे की साध न बुझाति है॥

(५४)

धायौ हिम दल हिम भूधर तैं सेनापति,
अंग अंग जग, थिर-जंगम ठिरत है।
पैयै न बताई भाजि गई है तताई, सीत,
आयौ आततताई, छिति-अंबर घिरत है॥
करत है ज्यारी, भेष धरि कै उज्यारी ही कौं,
घाम बार बार बैरी बैर सुमिरत है।
उत्तर तैं भाजि सूर, ससि कौ सरूप करि,
दच्छिन कै छोर छिन आधक फिरत है॥

पाइ—किरण, पा कर। पीर—पीड़ा। ठिरत—ठिठुरती है।
पैयै न बताई—वर्णनातीत है। तताई—गरमी। ज्यारी—साहस।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५५)

आयौ जोर जड़कालौ परत प्रबल पालौ,
लोगन कौं लालौ पर्‌यौ जियैं कित जाइ कै।
ताप्यौ चाहैं बारि कर, तिन न सकत टारि,
मानौं हैं पराये, ऐसे भये ठिठराइ कै॥
चित्र कैसौ लिख्यौ, तेजहीन दिनकर भयौ,
अति सियराइ गयौ घाम पतराइ कै।
सेनापति मेरे जान सीत कै सताये सूर,
राखे हैं सकोरि कर अंबर छपाइ कै॥

(५६)

परे तैं तुषार भयौ झार पतझार रही,
पीरी सब डार, सो बियोग सरसति है।
बोलत न पिक, सोई मैान है रही है आस-
पास निरजास, नैन नीर बरसति हैं।
सेनापति केली बिन, सुन री सहेली! माह,
मास न अकेली बनबेली बिलसति है।
बिरह तैं छीन तन, भूषन बिहीन दीन,
मानहु बसंत-कंत काज तरसति हैं॥

जड़कालौ—जाड़े का दिन। पालौ—कुहिरा। तिन—तिनका। पतराइ—पतला हो जाता है। निरजास—निराधार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५७)

लागैं ना निमेष, चारि जुग सौं निमेष भयौ,
कही न बनति कछू जैसी तुम कंत की।
मिलन की आस तैं उसास नाहीं छूटि जात,
कैसे सहैं सासना मदन मयमंत की॥
बीती है अवधि, हम अबला अवध, ताहि,
बधि कहा लैहौ, दया कीजै जीव जंत की।
कहियौ पथिक परदेसी सौं कि धन पीछे,
ह्वै गई सिसिर कछु सुधि है बसंत की॥

(५८)

सोए संग सब राती सीरक परति छाती,
पैयत रजाई नैक आलिंगन कीने तैं।
उर सौं उरोज लागि होत हैं दुसाल वेई,
सुचरी अधिक देह कुन्दन नवीने तैं॥
तन सुख रासि जाके तन के तन कौ छुवैं,
सेनापति थिरमा रहै समीप लीने तैं।
सब सीत हरन बसन कौं समाज प्यारी,
सीत क्यौं न हरै उर अंतर के दीने तैं॥

निमेष—पलक या क्षण। सासना—ताड़ना। अवधि—निश्चित समय। अवध—अवध्य। सीरक—ठंडी। रजाई—सुख। कुंदन—सोना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५९)

तब न सिधारी साथ, मीड़ति है अब हाथ,
सेनापति जदुनाथ बिना दुख ए सहैं।
चले मन रंजन के, अंजनि की भूली सुधि,
मंजनि की कहा उन्हीं के गूँदे केस हैं॥
बिछुरे गुपाल, लागै फागुन कराल तातैं,
भई हैं बिहाल, अति मैले तन भेस हैं।
फूल्यो है रसाल, सो तौ भयो उर साल, सखी
डार न गुलाल प्यारे लाल परदेश हैं॥

(६०)

चौरासी समान, कटि किंकिनी बिराजति है,
साँकर ज्यों पग-जुग घुंघरू बनाई है।
दौरिबे सँभार उर अंचल उघरि गयौ,
उच्च कुच कुंभ मनु चाचरि मचाई है॥
लालन गुपाल, घोरि केसरि कौं रंग लाल,
भरि पिचकारी मुंह ओर कौं चलाई है।
सेनापति धायौ मत्त काम कौ गयंद जानि,
चोप करि चपैं मानौ चरखी छुटाई है॥

मीड़ति—मींजती है। गूंदे—गूंथे। उरसाल—छाती का सूल। चाचरि—होली पर होने वाले खेल तमाशे। गयंद—हाथी। चोप करि—उत्साह पूर्वक। चपैं—दबा कर।

Sri Pratap Singh Library Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६१)

नवल किसोरी भोरी केसरि तैं गोरी, छैल,
हौरी मैं रही है मद जोबन के छकि कै।
चंपे कैसौ ओज, अति उन्नत उरोज पीन,
जाके बोझ खीन कटि जाति है लचकि कै।
लाल है चलायौ, ललचाई ललना कौं देखि,
उघरारौ उर, उरबसी ओर तकि कै।
सेनापति सोभा कौ समूह कैसे कह्यौ जात,
रह्यौ है गुलाल अनुराग सौं झलकि कै॥

(६२)

मकर सीत बरसत बिषम, कुमुद कमल कुम्हिलात।
बन उपवन फीके लगत, पियरे जोउत पात॥
पियरे जोउत पात, करत जाड़ौ दारुन अति।
सो दूनौ बढ़ि जात, चलत मारुत प्रचंड गति॥
भये नैक माहौठि, कठिन लागै सुठि हिमकर।
सेनापति गुन यहै, कुपित दंपति संगम कर॥

खीन—पतली। पियरे—पीले। माहौठि—जाड़ों में बरसने वाला पानी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्वितीय सोपान

शृंगार वर्णन

(१)

अंजन सुरंग जीते खंजन, कुरंग मीन,
नैंक न कमल उपमा कौ नियरात है।
नीके अनियारे अति चपल ढरारे प्यारे,
ज्यों ज्यों मैं निहारे त्यों त्यों खरौ ललचात है॥
सेनापति सुधा से कटाछनि बरसि ज्यावैं,
जिनकौ निरखि हियौ हरषि सिरात है।
कान लौं बिसाल, काम भूप के रसाल बाल,
तेरे दृग देखे मेरो मन न अघात है॥

(२)

करत कलोल स्रुति दीरघ अमोल लोल,
छुवैं दृग छोर, छबि पावत तरौना है।
नाहिनै समान, उपमान और सेनापति,
छाया कछू धरत चकित मृग छौना है॥
स्याम हैं बरन, ज्ञान ध्यान के हरन मानो,
सूरति को धरे बसीकरन के टोना है।
मोहत हैं करि सैन, चैन के परम ऐन,
प्यारी तेरे नैन मेरे मन के खिलौना है॥

अनियारे—नुकीले। ढरारे—आकर्षक। कुरंग—हिरन। हेति—सम्बन्धी। ऐन—घर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३)

चंचल, चकित, चल अंचल मैं झलकति,
दुरे नव नेह की निसानी प्रानपिय को।
मदन की हेति डारे ज्ञान ह्व के कन रेति,
मोहे मन लेति, कहे देत बात हिय की॥
पैनी, तिरछौहीं, प्रीत-रीति ललचौहीं, कुल-
कान सकुचौहीं, सेनापति ज्यारी जियकी।
नैंक अरसौहीं, प्रेम-रस बरसौहीं, चुभी,
चित मैं हँसौहीं, चितवनि ताही तिय की॥

(४)

काम की कमान तेरी भृकुटि कुटिल आली,
तातैं अति तीछन ए तीर से चलत हैं।
घूँघट की ओट कोट, करिकै कसाई काम,
मारे बिन काम, कामी केते ससकत हैं॥
तारे तैं न टूटैं ए निकासे हूते निकसै न,
पैने निसिबासर करेजे कसकत हैं।
सेनापति प्यारी तेरे तम से तरल तारे,
तिरछे कटाछ गड़ि छाती में रहत हैं॥

हेति—सम्बन्धी। ज्यारी—साहस। कोटि—दुर्ग। तमसे—काले। तरल—पतला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५)

हिय हरि लेत हैं निकाई के निकेत, हँसि,
देत हैं सहेत, निरखत करि सैन हैं।
सेनापति हरिनी के दृगन तैं अति नीके राजैं,
दरद हैं हरत, करत चित चैन हैं॥
चाहत न अंजन, रसिक जन रंजन हैं,
खंजन सरस रस-राग-रीति ऐन हैं।
दीरघ, ढरारे अनियारे नैंक रतनारे,
कंज से निहारे कजरारे तेरे नैन हैं॥

(६)

केसरि निकाई किसलय की रताई लिये,
झाईं नाहिं जिनकी धरत अलकत हैं।
दिनकर सारथी तें सेना देखियत रति,
अधिक अनार की कली तैं आरकत हैं॥
लाली की लसनि, तहाँ हीरा की हसनि राजै,
नैना निरखत, हरखत, आसकत हैं।
जीते नग लाल, हरि लालहि ठगत, तेरे,
लाल लाल अधर रसाल झलकत हैं॥

निकाई—सुन्दरता। निकेत—घर। सहेत—अर्थयुक्त। कंज—कमल। किसलय—कोपल। रताई—लालिमा। अलकत—महावर। आरकत—रक्तिम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७)

कालिंदी की धार निरधार है अधर गन,
अलि के धरत जा निकाई के न लेस हैं।
जीते अहिराज, खंडि डारे हैं सिखंडि, घन,
इन्द्रनील कीरति कराई नाहीं ए सहैं॥
एड़िन लगत सेना हिय के हरष-कर,
देखत हरत रति-कंत के कलेस हैं।
चीकने, सघन, अँधियारे ते अधिक कारे,
लसत लछारे, सटकारे तेरे केस हैं॥

(८)

नूतन जोबनवारी मिलिही जो बनवारी,
सेनापति बनवारी मनमैं बिचारियै।
तेरी चितवनि ताके चुभी चित बनिता के,
है उचित बनि ताके मया कै पधारियै॥
सुधि ना निकेतन की बाढ़ी उनके तन की,
पोर मीन केतन की जाइ कै निबारियै।
तो तजि अनवरत वाके और न बरत,
कीजै लाल नयरत बाल न बिसारियै॥

सिखंडि—मोर। सटकारे—चिकने और लंबे। मया—दया। मीनकेतन—कामदेव। निवारियै—रोकिये। अनवरत—लगातार। नवरत—नवीन प्रेम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(९)

नंद के कुमार मार हू ते सुकुमार ठाढ़े,
हुते निज द्वार, प्रीति रीति परबीन हैं।
निकसि हौं आई, देखि रही सकुचाई, सेना-
पति जदुराई मोंहि देखि हँसि दीन हैं॥
तब तैं है छीन छबि देखिबे कौ दीन, सब,
सुधि-बुधि हीन हम निपट अधीन हैं।
बिरह मलीन चैन पावत अलीन, मन,
मेरो हरि लीन तातैं सदा हरि लीन हैं॥

(१०)

तब तैं कन्हाई अब देत है दिखाई, रीति,
कहा है सिखाई तोहि देखे ही सुखारे हैं।
नींद सौं उदास, सेनापति देखिबे की आस,
तजि कै विलास भये बैरागी विचारे हैं॥
रूप ललचाते, भली बुरी को न पहिचानैं,
रावरे वियोग बावरे से करि डारे हैं।
लाल प्रान प्यारे सिख दै दै सब हारे नैन,
तेरे मतवारे ते न मेरे मतवारे हैं॥

मार—कामदेव। परबीन—दक्ष। छीन—क्षीण। विलास—सुख भोग। ते न मेरे मतवारे हैं—वे मेरे अधिकार के बाहर हो गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(११)

रूप कै रिझावत है किन्नर लौं गावत है,
सुधा बरसावत है लोयन स्रवन कौं।
हिय सियरावत है जिय हू तैं भावत है,
गिरिधर ज्यावत है वर वधू जन कौं॥
रसिक कहावत है, यामैं कहा पावत है,
चेटक लगावत है सेनापति मन कौं।
चितहिं चुरावत है कबहुँ न आवत है,
लाल तरसावत है हमैं दरसन कौं॥

(१२)

छूट्यो ऐबो जैबो, प्रेम पाती कौ पठैबो, छूट्यौ,
छुट्यौ दूरि दूरि हूं तैं देखिबौ हगेन तैं।
जेते मधियाती सब तिन सौं मिलाप छूट्यौ,
कहिबौ सँदेस हू कौ छूट्यौ सकुचन तैं॥
एती सब बातैं सेनापति लोक-लाज काज,
दुरजन त्रास छुटी जतान जतन तैं।
उर अरि रही, चित चुभि रही देखौ एक,
प्रीति की लगनि क्यौं हूं छूटति न मन तैं॥

लोयन—आँखें। स्रवन—कान। मधियाती—मध्यवर्ती। सकुचन—संकोच।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१३)

लाल के बियोग तैं, गुलाल हुतैं लाल, सोई,
अरुन बसन ओढ़ि जोग अभिलाख्यौ है।
सैन सुखतज्यौ, सज्यौ रैन दिन जागरन,
भूलि हू न काहू और रूप रस चाख्यौ है॥
प्यारी के नयन अँसुआन बरसत, तासौं,
भीजत उरोज देखि भाउ मन भाख्यौ है।
सेनापति मानौ प्रानपति के दरस-रस,
शिव कौं जुगल जलसाई करि राख्यौ है॥

(१४)

लोचन बिसाल, लाल अधर प्रबाल हू तैं,
चंद तैं अधिक भेद हास की निकाई है।
मन लै चलति रति करति सहासपन,
बोलति मधुर मानौ सरस सुधाई है॥
सेनापति स्याम तुम नीके रस बस भए,
जानति हैं तुम्हैं उन मोहनी सी लाई है।
काम की रसाल काढ़ै बिरह के उर साल,
ऐसी नव बाल लाल पूरे पुन्य पाई है॥

वसन—कपड़ा। उरोज—छाती। प्रबाल—मूंगा। रसाल—आम। साल—पीड़ा। काढ़ै—बढ़ाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१५)

जाउ कौ लिलार, ताके पाउ को अधर नैन,
अंजन है आज मनरंजन लसत है।
वारी हौं तिहारी छबि ऊपर बिहारी, मेरे,
तारन कौं प्यारे सुधारस बरसत है॥
छूजियै न पाइ हौं तौ सेवक हौं सेनापति,
प्रान पति मेरे तुम जीतैं तरसत है।
मान बिन सारौ, सरबस वारि डारौं, लाल,
बारौं ए चरन जे चरन परसत है॥

(१६)

बिनहीं जिरह, हथियार बिन ताके अब,
भूलि मति जाहु सेनापति समझाये है।
करि डारि छाती घोर घाइन सौं राती-राती,
मोहि धौ बताओ कौन भाँति छूटि आये है॥
पौढ़ौ बलि सेज करौं औसद की रेज बेगि,
मैं तुम जियत पुरबिले पुन्य पाये है।
कीने कौन हाल ! वह बाघिनी है बाल ! ताहि,
कोसति हौं लाल जिन फारि फारि खाये है॥

लिलार—माथा । जाउकौ—महावर । पाउकौ—पैर का ।
राती राती—लाल । पुरबिले—पूर्व जन्म के ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१७)

फूलन सौं बाल की बनाइ गुही बेनीलाल,
भाल दीनी बैंदी मृगमद की असित है।
अंग अंग भूषन बनाई ब्रज-भूषन जू,
बीरी निज कर कै खवाई अति हित है॥
ह्वै कै रस बस जब दीबे कौं महाउर के,
सेनापति स्याम गह्यौ चरन ललित है।
चूमि हाथ नाथ के लगाइ रही आँखिन सौं,
कही प्रान पति यह अति अनुचित है॥

(१८)

लोल हैं कलोल पारावार के अपार तऊ,
जमुना लहरि मेरे हिय कौं हरति हैं।
सेनापति नीकी पटवास हू तैं ब्रज-रज,
पारिजात हू तैं बनलता सरसति हैं॥
अंग सुकुमारी संग सोरह-सहस रानी,
तऊ छिन एक पै न राधा बिसरति हैं।
कंचन अटा पर जराऊ परजंक तऊ,
कुंजन की सेजैं वे करेजे खरकति हैं॥

मृगमद—कस्तूरी। असित—काली। लोल—चंचल। कलोल—तरंगें। पटवास—पक्का मकान, तंबू। खरकति—खटकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१९)

चले उत पति के बियोग उतपति भई,
 छाती है तपति ध्यान प्रान के अधार कौं।
सेनापति स्याम जू के बिरह बिहाल बाल,
 सखी सब करति बिचार उपचार कौं॥
प्रीतम अरग जातैं ताही तैं अरगजा तैं,
 सीरक न होति जुर जारत है मार कौं।
सीतल गुलाब हू सौं घिसि उर पर कीनौ,
 लेप घनसार कौ सो मानौं घन सार कौं॥

(२०)

कोहू तुव ध्यान करैं तेरौ गुनगान कोहू,
 आन की कहत आन, ज्ञान बिसरायौ है।
तो सौं उरझाइ मन गिरै सुरझाइ सकै,
 कौन सुरझाइ, काहू मरम न पायौ है॥
सुधा तैं सरस ताकौं तेरौ है दरस तेरे,
 ताकौं न तरस सेनापति मन आयौ है।
तेरे हँसि हेरे हरि, हिए ऐसे हाल होत,
 हाला में हलाइ मानौ हलाहल प्यायौ है॥

उपचार—चिकित्सा। अरग—अलग। अरगजा—कपूर चन्दनादि। सीरक—ठंडा। जुर—ज्वर। घनसार—कपूर। घन—लुहार का हथौड़ा। सार—लोहा। हाला—मदिरा। हलाहल—विष।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२१)

पून्यौ सी तिहारी लाल, प्यारी मैं निहारी बाल,
तारे सम मोती के सिंगार रही साजि कै।
झीनौ पटु गात, चाँदनी सौं अवदात जात,
लोचन चकोरन कौं देखैं दुख भाजि कैं॥
सेनापति तनसुख सारी की किनारी बीच,
नारी के बदन आछी छबि रही छाजि कै।
पूरन सरद-चंद-बिम्ब ताके आस पास,
मानहु अखंड रह्यौ मंडल बिराजि कै॥

(२२)

भौन सुधराये सुख साधन धराये चार्‌यौ,
जाम यों बराये सखी आज रति राति है।
आयौ चढ़ि चंद पै न आयौ बसुदेव-नंद,
छाती न धिराति आधी राति नियराति है॥
सेनापति प्रीतम की प्रीति की प्रतीति मोहि,
पूछति हौं तोहि मोसी और को सुहाति है।
किन बिरमाये केलि कला कै रमाये लाल,
अजहूं न आये धीर कैसे धरि जाति है॥

अवदात—उज्वल। तनसुख—एक प्रकार का फूलदार कपड़ा। भौन—घर। धिराति—धीर धरना। बिरमाए—फँसा लिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२३)

चंद द्युति मंद कीने नलिन मलिन तैं ही,
तो तैं देव अंगनाऊ रंभादिक तर हैं।
तूसी एक तूही अरु तोसे तेरे प्रतिबिम्ब,
सेनापति ऐसे सब कवि कहत हैं॥
समुझैं न वेई, मेरे जान यौं कहत जेई,
प्रतिबिम्ब वैह तेरे भेष निरंतर हैं।
यातैं मैं बिचारी प्यारी परे दरपन बीच,
तेरे प्रतिबिंबौ पै न तेरी पटतर हैं॥

(२४)

लाल मन रंजन के मिलिवे कौं मंजन कै,
चौकी बैठी बार सुखवति नर नारी है।
अंजन, तमोर, मनि, कंचन, सिंगार बिन,
सोहत अकेली देह सोभा कै सिंगारी है॥
सेनापति सहज की तनकी निकाई ताकी,
देखि कै दृगन जिय उपमा विचारी है।
ताल गीत बिन, एक रूप कै हरति मन,
परबीन गाइन की ज्यौं अलापचारी है॥

अंगनाऊ—स्त्रियाँ। गाइन—गवैये। ऊजरी--गोरी। रंचक—थोड़ा सा। बारी—अल्पवयस्का।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२५)

षोड़स बरस की है, खानि सब रस की है,
जो सुख बरस की है, करता सुधारी है।
ऊजरी कनक मन, गूजरी भनक ऐसी,
गूजरी बनक बनी लाल तन सारी है॥
सौंह मो तिहारी सेनापति है बिहारी! मैंतो,
गति-मति हारी जब रंचक निहारो है।
नंद के कुमार वारी प्यारी सुकुमार वारी,
भेष मारवारी मानौ नारी मार वारी है॥

(२६)

तेरौ मुख देखे चंद देखौ न सुहाइ अरु,
चंद के अछत जाकौं मन तरसत है।
ऐसे तेरे मुख सौं कहत सब कवि ऐसे,
देखौ मुख चंद के समान दरसत है॥
वे तौ समुझैं न कछु सेनापति मेरे जान,
चंद तै मुखारबिन्द तेरौ सरसत है।
हँसि हँसि, मीठी मीठी, बातैं कहि कहि ऐसे,
तिरछे कटाछ कब चंद बरसत है॥

ऊजरी--साफ़। रंचक--थोड़ा सा। अछत--अछत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२७)

हितू समझावैं, गुरुजन सकुचावैं बैन,
सिख के सुनावैं, पै न चैन लहियत है।
सेनापति स्याम मुसकाई मन बस कीनौ,
तातैं निसिबासर बिरह दहियत है॥
नेह तैं बिकल गेह बैठे रहियत नित,
कुल कौ कलंक कहौ कैसे सहियत है।
कौहू जौ अचानक मिलैं तौ मिलैं मारग में,
वाकी उत जैबो अब कैसो सहियत है॥

(२८)

जरद बदन, पान खाये से रदन मानौं,
हरद सरद-चंद दुति दिखावति है।
चीकने चिकुर छुटि रहे हैं बिसाल भाल,
बाँधी कसि पट्टी सेनापति रिझावति है॥
कीने नैन देखै मुख-चंद नंदन कौं,
अंक लै मयंकमुखी ताहि मल्हावति है।
बाएँ कर होरिल कौं सीस राखि दाहिने सौं,
गहे कुच प्यारी पय-पान करावति है॥

हितू—भाई-बन्धु। बैन—वाणी। रदन—दाँत। हरद सरद-चन्द—मानौ शरद का चन्द्रमा पीला पड़ गया है। चिकुर—बाल। मल्हावति—पुचकारती है। होरिल—शिशु।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२९)

कौनै बिरमाये कित छाये अजहूं न आए,
कैसे सुधि पाऊँ प्यारे मदन गुपाल की।
लोचन जुगल मेरे तादिन सुफल ह्वै हैं,
जादिन बदन छबि देखौं नँदलाल की॥
सेनापति जीवन अधार गिरिधर बिन,
और कौन हरै बलि बिथा मो बिहाल की।
इतनी कहत, आँसू बहत फरकि उठी,
लहर लहर दृग बाँई ब्रज-बाल की॥

(३०)

नोकी अंगना है, भावै सब अंग नाहै देखी,
निज अंगना है ठाढ़ी अंग सिंगारति है।
यह बसुधा रति है ऐसौ जसु धारति है,
कोल कौं सुधारति है देति सुधा रति है॥
पूरि कामना सकत तोरौ ताकी आस कत,
सेनापति आसकत नींद बिसारति है।
बोलनै सराहति है, प्रान बलिहारति है,
तन-मन हारति है तोहि निहारति है॥

अंगना—कामिनी। नाहै—पति को। अंगना—आँगन।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३१)

अमल कमल, जहाँ सीतल सलिल, लागी
आस-पास पारिन सबनि ताल जाति है।
तहाँ नव नारी, पंचबान बैस वारी महा,
मत्त प्रेम-रस आस बनि ताल जाति है॥
गावति मधुर, तीनि ग्राम सात सुर मिलि,
रही तानिनि में बसि बनि ताल जाति है।
सेनापति मानौ रति, नीकी निरखति अति,
देखि कै जिनै सुरेस बनिता लजाति है॥

(३२)

कमल तैं कोमल, विमल अति कंचन तैं
सोभत हैं अंग भासमान बरनत के।
ताकी तरुनाई, चतुराई की निकाई कीब,
कान परी वा सभा समान बरनत के॥
सेनापति नदलाल पेंचन ही बस करी,
पाये फल बल्लभा समान नर न तके।
दिन दिन प्रीति नई, देखति अनूप भई,
वाम भाग को प्रभा समान बरन तके॥

अमल—निर्मल। पारिन—मेंड़।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३३)

चले तैं तिहारे पिय, बाढ़्यो है बियोग जिय
रहियैं उदास छूटि गयौ है सहाइ सौं।
लोचन स्रवत जल, पल न परति कल,
आनँद कौ साज सब धर्यो है उठाइ सौं॥
सेनापति भूले से सदाही रहियत तौतैं,
ज्ञान, प्रान, तन मन लीनौ है उठाइ सौ।
कछू न सोहाइ, दिन राति न बिहाइ हाइ,
देखे तैं लगत अब ऊजर सौं पाइसौ॥

(३४)

झूठे काज बनाइ, मिसही सौं घर आइ,
सेनापति स्याम बतियान उघरत हौ।
आइ कै समीप, करि साहस सयान ही सौं,
हँसी हँसी बातन ही बाँह कौं धरत हौ॥
मैं तो सब रावरे की बात मन मैं की पाइ,
जाकौं परपंच एतौ हम सौं करत हौ।
कहाँ एती चतुराई, पढ़ी आप जदुराई,
आँगुरी पकरि पहुँचा कौ पकरत हौ॥

सोहाइ—अच्छा लगना। ऊजर—उजाड़। रावरे—आपके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३५)

ज्यों ज्यों सखी सीतल करति उपचार सब,
त्यों त्यों तन बिरह की बिथा सरसाति है।
ध्यान कौं धरत सगुनौतियो करत, तेरे
गुन सुमिरत ही बिहाति दिन राति है॥
सेनापति जदुबीर मिलें ही मिटैगी पीर,
जानत हौ प्यास कैसे ओसन बुझाति है।
मिलिबे के समै आप पाती पठवत, कछु
छाती की तपति पति पाती तैं सिराति है॥

(३६)

जौ तैं प्रानप्यारे परदेश कौ पधारे तौ तैं,
बिरह तैं भई ऐसी ता तिय की गति है।
करि कर ऊपर कपोलहिं कमलनैनी,
सेनापति अनमनी बैठियै रहति है॥
कागहि उड़ावै, कौहू कौहू करै सगुनौती,
कौहू बैठि अवधि कै बासर गनति है।
पढ़ि पढ़ि पाती, कौहू फेरि कैं पढ़ति कौहू,
प्रीतम कौं चित्र मैं सरूप निरखति है॥

सगुनौतियो—सगुन उठाना। बिहाति—बीतती है। तिय—स्त्री। अनमनी—दुचित्ती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रामायण वर्णन

(३७)

सुरतरु सार की सँवारी है बिरंचि पचि,
कंचन खचित चिंतामनि के जराइ की।
रानी कमला कौं पिय-आगम कहन हारी,
सुरसरि सखी सुख दैनी प्रभु पाइ की॥
वेद मैं बखानी तीनि लोकन की ठकुरानी,
सब जग जानी सेनापति के सहाइ की।
देव-दुख-दंडन, भरत सिर मंडन वे,
बंदौं अघ खंडन खराऊँ रघुराइ की॥

(३८)

कंज के समान सिद्ध मानस मधुप निधि,
परम निधान सुरसरि-मकरंद के।
सब सुख साज, सुर-राजन के सिरताज,
भाजन हैं मंगल मुकति रूप कंद के॥
सरजू-बिहारी रिषिनारो ताप-हारी ज्ञान,
दाता हितकारी सेनापति मति मंद के।
बिस्व के भरन, सनकादि के सरन दोऊ,
राजत चरन महाराज रामचंद के॥

सुरतरु—कल्पवृक्ष। पचि—परिश्रम कर के। खचित—चित्रित। अघखंडन—पापनाशक। कंज—कमल। सुरसरि मकरंद—गंगाजल रूपी मधु। भाजन—आगार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३९)

सोहैं देह पाइ किधौं चारि हैं उपाइ किधौं,
चतुरंग संपति के अंग निरधार हैं।
किधौं ए पुरुष रूप चारि पुरुषारथ हैं,
किधौं वेद चारि धरे मूरति उदार हैं॥
सब गुन आगर उजागर सरूप धीर,
सेनापति किधौं चारि सागर संसार हैं।
दीपति बिसाल, किधौं चारि दिगपाल, किधौं,
चारौ महाराजा दशरथ के कुमार हैं॥

(४०)

त्रिभुवन रच्छन दच्छ पच्छ रच्छिय कच्छप वर।
फन फनिंद संभार, भार दिग्गज तुव दुंभर॥
धरनि धुक्कि जनि परहि, मेरु डग मग जनि डुल्लहि।
सेनापति हिय फुल्लि, क्यों न बिरदावलि बुल्लहि॥
इहि बिधि बिरंचि सुक्कित बदन, कुक्कि धीर चहुँ चक्क दिय।
करषत पिनाक दशरथ्थ सुत, राम हत्थ समरत्थ लिय॥

चारि उपाइ—साम, दाम, दंड, भेद। चतुरंग संपत्ति—भूमि पशु, विद्या तथा धन। करषत—खींचना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४१)

हहरि गयौ हरि हिये, धधकि धीरत्तन मुक्किय।
ध्रुव नरिंद थरहरयौ, मेरु धरनी धसि धुक्किय॥
अक्खि पिक्खि नहिं सकइ, सेस नक्खिन लग्गिय तल
सेनापति जय सद्द, सिद्ध उच्चरत बुद्धि बल॥
उद्दंड चंड भुजदंड भरि धनुष राम करषत प्रबल।
टुट्टिय पिनाक निरघात सुनि, लुट्टियदिगंतदिग्गजबिक्कल

(४२)

सीता अरु राम जुवा खेलत जनक धाम,
सेनापति देखि नैन नैकहू न मटके।
रूप देखि देखि रानी वारि फेरि पियै पानी,
प्रीति सौं बलाइ लेत कैयौ कर चटके॥
पहुँची के हीरन में दंपति की झाईं तरी,
चंद बिबि मानौं मध्य मुकुर निकट के।
भूलि गयौ खेल दोऊ देखत, परसपर,
दुहुन के दृग प्रतिबिंबन सौं अटके॥

हहरि—काँप गया। धीरत्तन मुक्किय—धीर लोगों का धैर्य छूट गया। धुक्किय—धँस गया। अक्खि—आँख। पिक्खि—देखना। नक्खिन—नष। चंद—बलवान। निर्घात—वज्रपात। बिबि—बिम्ब।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४३)

आनंद मगन चंद महा मनि मंदिर मैं,
रमै सियराम सुख, सोभा है सिंगार को।
पूरन सरद ससि सोभा सौं परस पाइ,
बाढ़ी है सहस गुनी दीपति अगार की॥
भौन के गरभ छबि छीर की छिटकि रही,
बिबिध रतन जोति अंबर अपार को।
दोऊ बिहसत बिलसत सुख सेनापति,
सुरनि करत छीर सागर बिहार की॥

(४४)

पिक्खि हरिन मारीच, थप्पि लक्खन सिय सत्थह।
चल्यौ बीर रघुपत्ति, क्रुद्ध उद्धत धनु हत्थह॥
परत पग्ग भर मग्ग, क्रित्ति सेनापति बुल्लिय।
जलनिधि जल उच्छलिय, सब्ब पब्बै गन डुल्लिय॥
दब्बिय जु छित्ति पत्ताल कँह, भुजग पत्ति भग्गिय सटकि
रक्खिय जु हट्टि गुट्टिय कठिन, कमठ पिट्ठि टुट्टिय चटकि

भौन के गरभ—आँगन। थप्पि-स्थापित करके। पग्ग भर-पैर का भार। बुल्लिय-वर्णन करते हैं। छित्ति—पृथ्वी। भुजग पत्ति—शेषनाग।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४५)

बिरच्यो प्रचंड बरिबंड है पवन पूत,
जाके भुजदंड दोऊ गंजन गुमान के।
इत तें पखान चले उत तें प्रबल बान,
नाचै हैं कबंध माचे महा घमसान के॥
सेनापति धीर कोई धीर न धरत सुनि,
घूमत गिरत गजराज हैं दिसान के।
बरजत देव कपि तरजत रावन कौं,
लरजत गिरि गरजत हनूमान के॥

(४६)

काढ़त निषंग तैं, न साधत सरासन मैं,
खैंचत, चलावत, न बान पेखियत है।
स्रवन मैं हाथ, कुंडलाकृति धनुष बीच,
सुन्दर बदन इकचक लेखियत है॥
सेनापति कोप ओप ऐन हैं अरुन नैन,
संबर दलन मैन तैं बिसेखियत है।
रह्यौ नत ह्वै कै अंग ऊपर कौं संगर मैं,
चित्र कैसो लिख्यो राजा राम देखियत है॥

कबंध—रुंड। पखान—पत्थर। तरजत—डाँटते हैं। लरजत—काँपते हैं। निषंग—तरकस। संबर दलन—संबर दैत्य का नाश करने वाले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४७)

सिव जू की निद्धि, हनुमान हू की सिद्धि, बिभी,
षन की समृद्धि बालमीकि नैं बखान्यौ है।
बिधि कौं अधार चारौं बेदन कौ सार,
जप जज्ञ कौं सिंगार सनकादि उर आन्यो है॥
सुधा के समान भोग मुकति निधान महा,
मंगल निदान सेनापति पहिचान्यौ है।
कामना कौ कामधेनु, रसना कौ बिसराम,
धरम कौ धाम राम नाम जग जान्यौ है॥

(४८)

महाबलवंत हनुमंत बीर अंतक ज्यौं,
जारी है निसंक लंक बिक्रम सरसि कै।
उठी सत जोजन तैं चौगुनी झरफ जरे,
जान सुरलोक पै न सीरे होत ससि कै॥
सेनापति कछू ताहि बरनि कहत मानौ,
ऊपर तैं परे तेज लोक हैं बरसि कै।
आगम बिचारि राम बान कौ अगाऊ किधौं,
सागर तैं पर्‍यौ बड़वानल निकसि कै॥

अंतक—यमराज। निद्धि—खजाना। झरफ—लपट।
आगम—भविष्य।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४९)

पूरबली जासौं पहिचान हो न कोहू आइ,
भयो न सहाय जो सहाइ की ललक मैं।
पहिलै ही आयौ बैरी बीर कै मिलायौ, छिन
छ्वायौ सीस लाल पद नख की झलक मैं॥
सेनापति दया दान बीरता बखानै कौन,
जो न भई पीछे आगे होनी न खलक मैं।
परम कृपाल, रामचन्द्र भुवपाल, विभी,
षन दिगपाल कीनौ पाँचई पलक पै॥

(५०)

सेनापति राम अरि सासना के साइक तैं,
प्रगट्यो हुतासन, अकास न समात है।
दीन महा मीन, जीव हीन जलचर चुरैं,
बरुन मलीन कर मीड़ै पछितात है॥
तब तौं न मानी, सिन्धुराज अभिमानी अब,
जाति है न जानी कहा होत उतपात है।
संका तैं सकानी लंका रावन की रजधानी,
पजरत पानी धूरिधानी भयौ जात है॥

पूरबली—पूर्वकालिक। खलक—संसार। अरि सासना—शत्रु दमनकारी। हुतासन—अग्नि। मीड़ै—मीजै। पजरत—जलना। धूरिधानी—धूल कर देना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५१)

धर्‌यौ पग पेलि दसमत्थ हू के मत्थ पर,
जोरौ आइ हत्थ समरत्थ बाहु बल मैं।
यह कहि कोपि कै कपीस पाउँ रोपि करि,
सेनापति बीर बिरभ्झानौ बैरि दल मैं॥
फूस है फनिंद भये पब्बै चक चूर भये,
दिग्गज गरद, दल दारुन दहल मैं।
पाइ बिकराल के धरत ततकाल, गए,
सपत पताल फूटि पापर से पल मैं॥

(५२)

बालि कौं सपूत, कपिकुल पुरहूत रघु,
बीर जू कौ दूत, धारि रूप बिकराल कौं।
जुद्ध-मद गाढ़ौ पांउ रोपि भयौ ठाढ़ौ सेना-
पति बल बाढ़्यौ रामचंद भुवपाल कौं॥
कच्छप कहलि रह्यौ, कुंडली टहलि गये,
दिग्गज दहलि, त्रास पर्‌यौ चक्र चाल कौं।
पाँउ के धरत, अति भार के परत भयौ,
एकै है परत मिलि सपत पताल कौं॥

बिरभ्झानौ—भल्ला गया। पब्बै—पर्वत। सपत पताल—सातों पाताल। पुरहूत—इन्द्र। कहलि—कराहने लगना। टहलि गये—खसक गये। चक्रचाल—चक्कर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५३)

जिनकी पवन फौक, पंछिन मैं पंछिराज,
गौरव मैं गिरि, मेरु मंदर के नाम के।
पोहै दिगपाल वपु, अंबर बिसाल बसैं,
भाल मध्य निकर दहन दिन धाम के॥
अनल कौं जल करैं, जल हूं कौं थल करैं,
अगम सुगम सेनापति हित काम के।
वज्र हू तें दारुन, दनुज दल दारन, वे
पब्बय बिदारन, प्रबल बान राम के॥

(५४)

कुस लव रस करि गाई सुर धुनि कहि,
भाई मन संतन के त्रिभुवन जानी है।
देवन उपाइ कीनौ यहै भौ उतारन कौं,
बिसद बरन जाकी सुधासम बानी है॥
भुव पति रूप देह धारी पुन्न सील हरि,
आई सुर पुर तैं धरनि सिय रानी है।
तीरथ सरब सिरोमनि सेनापति जानी,
राम की कहानी गंगा धार की बखानी है॥

फौक–छान के बचा हुआ निस्सार पदार्थ। पोहैं—छेदते हैं। भाल—तीर का फल। अंबर—आकाश। भौ–भवसागर। पुन्न–पुण्य।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम रसायन

(५५)

दैके जिन जीव ज्ञान, प्रान तन मन मति,
जगत दिखायौ जाकी रचना अपार है।
दृगन सौं देखे विस्वरूप है अनूप जाकौ,
बुद्धिसौं बिचारै, निराकार निरधार है॥
जाकौं अध ऊरध गगन दस दिसि उर,
ब्याप रह्यौ तेज, तिनि लोक कौं अधार है।
पूरन पुरुष हृषीकेस गुन धाम राम,
सेनापति ताहि बिनवत बार बार है॥

(५६)

सोचत न कौहू, मन लोचत न बार बार,
मोचत न धीरज, रहत मोद घन है।
आदर के भूखे रूखे रूख सौं अधिक रूखे,
दूखे दुरजन सौं न डारत बचन है॥
कपट बिहीन ऐसो कौन परबीन जासौं,
हूजियै अधीन सेनापति मान धन है।
जगत भरन जन रंजन करन मेरौ,
बारिद बरन राम दारिद हरन है॥

मति—बुद्धि। लोचन—चाहता है। मोचन—छोड़ना। मोद—प्रसन्नता। वारिद बरन—मेघ के रंग का।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५७)

लछि ललना है, सारदाऊ रसना है जाकी,
  ईस महामाया हू कौं निगमन गायौ है।
लोचन बिरोचन सुधाकर लसत, जाकौं,
  नदन बिधाता, हर नाती जाहि भायौ है॥
चारि दिगपाल हैं बिसाल भुजदंड, जाके,
  सेस सुख सेज, तेज तीनि लोक छायौ है।
महिमा अनंत सिय कंत राम भगवंत,
  सेनापति संत भागिवंत काहू पायौ है॥

(५८)

छाँड़ि कै कुपैंडे पड़े जो विभीषनादि,
  तेहैं तुम तारे, चित चीते काम करे हैं।
पैंड़ौ तजि बन मैं कुपैंडै परी रिषिनारी,
  तारी ताके दोष मन में न कछू धरे हैं॥
पैंड़ौ तजि हम हू, कुपैंडै परे तारिबे कौं,
  तारियै अपार कलमष भार भरे हैं।
सेनापति प्रभु पैंडै परे ही जौ तारत हौ,
  तौब हम तारिबे कौं तेरे पैंड़े परे हैं॥

निगमन—वेद। विरोचन—सूर्य। सुधाकर—चन्द्रमा। कुपैंड़े—कुमार्ग। पैड़े परे—पीछे पड़े। चित चीते—मनचाहे। रिषिनारी—अहिल्या। कलमष—पाप।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५९)

नीकी मति लेह, रमनी की मति लेह मति,
सेनापति चेत कछू पाहन अचेत है।
करम, करम करि करमन कर, पाप
करम न कर मूढ़, सीस भयौ सेत है॥
आवै बनि जतन ज्यौं रहै बनि जतनन,
पुन्न के बनिज तन मन किन देत है।
आवत बिराम, बैस बीति अभिराम, तातैं
करि बिसराम भजि रामैं किन लेत है॥

(६०)

कीनौ बालापन बाल केलि मैं मगन मन,
लीनौ तरुनापै तरुनी के रस तीर कौं।
अब तू जरा मैं पर्‌यौ मोह पिंजरा मैं, सेना
पति भजु रामैं जो हरैया दुख पीर कौं॥
चितहिं चिताउ भूल काहू न सताउ, आउ
लोहे कैसो ताउ, न बचाउ है सरीर कौं।
लेह देह करि कै, पुनीत करि लेह देह,
जीभं अवलेह देह सुरसरि नीर कौं॥

रमनी—स्त्री। मति—राय। करम करम करि करमन कर—क्रम से संसार के सब कर्मों को कर। तरुनापै—युवावस्था में। तरुनी—युवती। अवलेह—चाटने वाली दवा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६१)

कोहै उपमान ? भासमान हू तैं भासमान,
परम निदान सेनापति कै सहाइ कौं ।
तेज कौ अधार अति तीछन सहस धार,
एकै सरदार हथियार समुदाइ कौं ॥
अमर अवन, दल दानव दवन, मन
पवन गवन पुजवन जन चाइ कौं ।
कामना कौ बरसन, सदा सुभदरसन,
राजत सुदरसन चक्र हरि राइ कौं ॥

(६२)

गंगा तीरथ के तीर, थके से रहौ जू गिरि,
कै रहौ जू गिरि चित्रकूट कुटी छाइ कै ।
जातैं दारा नसी, बास तातैं बारानसी किधौं,
लुंज ह्वै कै वृन्दावन कुंज बैठ जाइ कै ॥
भयौ सेतु अंध ! तू हिये कौ हेतु बँधजाइ,
धाइ सेतु बंध के धनी सौं चित लाइ कै ।
बसौ कंदरा मैं भजौ खाइ कंद रामैं, सेना
पति मंद रामै मति सोचै अकुलाइ कै ॥

उपमान—समता करने वाला । भासमान—सूर्य । अमर अवन—देवताओं का रक्षक । दल दानव दवन—दानवों के दल का नाशक । मन पवन गवन—मन और पवन की गति वाला । दारा-स्त्री । गिरि—पहाड़ । भयौ सेतु अंध—बाल सफ़ेद हो गये और दृष्टि जाती रही । कंदरा—गुफ़ा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

त्रितीय सोपान

श्लेष वर्णन

(१)

परम ज्योति जाकी अनंत, रमि रही निरंतर।
आदि मध्य अरु अंत, गगन दस दिसि बहिरंतर॥
गुन पुरान इतिहास, वेद बंदीजन गावत।
धरत ध्यान अनवरत, पारब्रह्मादि न पावत॥
सेनापति आनदघन, रिद्धि सिद्धि मंगल करन।
नाइक अनेक ब्रह्मण्ड कौ, एक राम संतत सरन॥

(२)

पाई जो कविन जल-थल जप-तप करि,
विद्या उर धरि, परिहरि रस रोसौ है।
ताही कविताई कौं सुजस पसु चाहत है,
सेनापति जानत जो अच्छर नओसौ है॥
पाइ कै परस जाकौ सिलाहू सचेत भई,
पायौ बोध-सार सारदाहू कौं धरोसौ है।
और न भरोसौ, जिय परत खरोसौ, ताही
राम पदपंकज कौ पूरन भरोसौ है॥

निरंतर—सदा। बहिरंतर—बाहर भीतर। संतत—सदा। रस रासौ—राग द्वेष। नओसौ—नवीन अक्षर ज्ञान। परस—स्पर्श। बोधसार—तत्व ज्ञान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३)

भूप-सभा-भूषन छिपावौ परदूषन कु—
बोल एक हू खन कहे न देह पाइ कै।
राज महा जानि, पूरे सकल कलानि सेना—
पति गुनखानि और हू कौं गुनदाइ कै॥
तुम ही बताई, कछु कीनी कविताई, ता मैं
होइ जोगताई, दुचिताई के सुभाइ कै।
बुद्धि के बिनाइकै, गुसाँईं ! कविनाइकै, सु—
लीजियौ बनाइकै कहत सिर नाइ कै॥

(४)

दीछित परसराम, दादौ है बिदित नाम,
जिन कीन्हें जज्ञ, जाकी जग मैं बड़ाई है।
गंगाधर-पिता गंगाधर के समान जाकौं,
गंगातीर बसत अनूप जिन पाई है॥
महा जानिमनि, विद्या दान हू कौ चिन्तामनि
हीरामनि दीछित तैं पाई पंडिताई है।
सेनापति सोई, सीतापति के प्रसाद जाकी,
सब कवि कान दै सुनत कविताई है॥

खन—त्तण। जोगताई—योग्यता। बिनाइकै—गणेशजी को।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५)

मूढ़न कौं अगम सुगम एक ताकौं जाकी,
तीछन अमल बिधि बुद्धि है अथाह की ।
कोई है अभंग कोई पद है सभंग सोधि,
देखै सब अंग, सम सुधा के प्रवाह की ॥
ज्ञान के निधान, छद कोष सावधान जाकी,
रसिक सुजान सब करत हैं गाहकी ।
सेवक सियापति कौं सेनापति कवि सोई,
जाको द्वै अरथ कविताई निरबाह की ॥

(६)

दोष सौं मलीन, गुनहीन कविता है तौ पै,
कीने अरबीन परबीन कोई सुनि है ।
बिन ही सिखाये, सब सीखि हैं सुमति जौ पै,
सरस अनूप रस रूप यामैं धुनि है ॥
दूषन कौं करिकै, कवित्त बिन भूषन कौं,
जो करै प्रसिद्ध ऐसो कौन सुरमुनि है ।
रामै अरचत सेनापति चरचत दोऊ,
कबित रचत यातैं पद चुनि चुनि है ॥

तीछन—तेज़ । गाहकी—चाहना । मलीन—मैली । अरचत—पूजा करता है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७)

राखति न दोषै पोषै पिंगल के लच्छन कौं,
बुध कवि के जो उपकंठ ही बसति है।
जोए पद मन कौं हरषि उपजावति है,
तजै को कनरसै जो छंद सरसति है॥
अच्छर हैं बिषद करति उषै आप सम,
जातैं जगत की जड़ताऊ बिनसति है।
मानो छबि ताकी उदवत सविता की सेना,
पति कवि ताकी कविताई बिलसति है॥

(८)

तुकन सहित भले फल कौं धरत सूधे,
दूरि कौं चलत जे हैं धीर जिय ज्यारी के।
लागत विविध पच्छ सोहत हैं गुन संग,
स्रवन मिलत मूल कीरति उज्यारी के॥
सोई सीस धुनै जाके उर मैं चुभत नीके,
बेग विधि जात मन मोहैं नरनारी के।
सेनापति कवि के कवित्त बिलसति अति,
मेरे जान बान हैं अचूक चापधारी के॥

उपकंठ—कंठ के पास। कनरसै—कान के रस को अर्थात् कानों को अच्छी लगने वाली बातें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(९)

बानी सौं सहित सुबरन मुँह रहैं जहाँ,
धरति बहुत भाँति अरथ समाज कौं।
संख्या करि लीजै अलंकार हैं अधिक यामैं,
राखौ मति ऊपर सरस ऐसे साज कौं॥
सुनु महाजन चोरी होति चारि चरन की,
तातैं सेनापति कहै तजि करि ब्याज कौं।
लीजियौ बचाइ ज्यौं चुरावै नहिं कोई सौंपी,
बित्त की सी थाती मैं कबित्तन की राज कौं॥

(१०)

ब्यापी देस देस बिस्व कीरति उज्यारी जाकी,
सीतै संग लीने जामैं केवल सुधाई है।
सुर-नर-मुनि जाके दरस कौं तरसत,
राखत न खर तेजै कला की निकाई है।
करन के जोर जीति लेत है निसा कलंकै,
सेवक हैं तारे बाकी गनती न पाई है।
राजा रामचंद अरु पूनो के उदित चंद,
सेनापति बरनी दुहूं की समताई है॥

अरथ—संपत्ति। अलंकार—आभूषण। चरन—छंद का चतुर्थांश। थाती—धरोहर। खर—तीक्ष्ण, एक राक्षस का नाम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(११)

लाह सौं लसति नग सोहत सिंगार हार,
छाया सो न जरद जुही की अति प्यारी है।
जाकी रमनीय रौंस बाल हैं रसाल बनी,
रूप माधुरी अनूप रंभाऊ निवारी है॥
जाति है सरस सेनापति बनमाली जाहि,
सींचै घन रस फूल भरी मैं निहारी है।
सोभा सब जोबन की निधि है मृदुलता की,
राजै नव नारी मानों मदन की बारी है॥

(१२)

जाकी सुभ सूरति सुधारो है सुहाग भाग.
पूरो तौं लगै रसाल नाहैं जब दरसी।
जर बलै चलै रतो आगरी अनूप बानी,
तारा है अधिक जहाँ बान नहि करसी॥
सेनापति सदा जामैं रूपौ है अधिक गुनौ,
जाहि देखि नोधन की छतियाँ है तरसी।
धनी के पधारै बाट काँटे हू में पाँव धरि,
यह बर नारि सुवरन की मुहर सी॥

लाह—लाख, कान्ति। नग—पेड़, दल। रौंस—क्यारियों के बीच का मार्ग। रंभा—केला। सुहाग—सौभाग्य।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१३)

कौल की है पूरी जाकी दिन दिन बाढ़ै छबि,
रंचक सरस नथ झलकति लोल है।
रहै परि यारी करि संगर में दामिनी सी,
धीरज निदान जाहि बिछुरत को लहै ॥
यह नव नारि साँची काम की सी तरवारि,
अचरज एक मन आवत अतोल है।
सेनापति बाँहैं जब धारै तब बार बार,
ज्यौं ज्यौं मुरि जात त्यौं त्यौं कहत अमोल है॥

(१४)

जाकौं फेरि फेरि नारि सेनापति सब चाहैं,
बनी नव तरुन के अंतर बसति है।
सब जीकौं नातौ ताहि डारै करि हातौ पाइ,
हाथ करै लाल जो सनेह सरसति है ॥
अंग संग काज टूक टूक ह्वै रहति सनी,
सहज के रस रंग राचति रसति है।
लता की निकाई जामैं नीकी बनि आई मिहीं,
मिहदी की समता कौं प्यारी परसति है ॥

कौल—वादा। रंचक—छोटी। अतोल—अनुपम। नारि—स्त्री या गर्दन। हातौ—पृथक। मिहीं—महीन।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१५)

पैयै भली घरी तन सुख सब गुन भरी,
नूतन अनूप मिहीं रूप की निकाई है।
आछी चुनि आई कैयौ पेंचन सौं पाई प्यारी,
ज्यौं ज्यौं मन भाई त्यौं त्यौं मूड़हिं चढ़ाई है॥
पूरी गज गति बरदार है सरस अति,
उपमा सुमति सेनापति बनि आई है।
प्रीति सौं बाँधै बनाइ, राखै छबि थिरकाइ,
काम कीसी पाग बिधि कामिनी बनाई है॥

(१६)

लीने सुघराई संग सोहत ललित अंग,
सुरत के काम के सुघर ही बसति है।
गौरी नव रस राम करी है सरस सोहै,
सुहै के परस कलियान सरसति है॥
सेनापति जाके बाँके रूप उरझत मन,
बीना मैं मधुर नाद सुधा बरसति है।
गूजरी झनक माझ सुभग तनक हम,
देखी एक बाला राग माला सी लसति है॥

घरी—तह। बरदार—अच्छी स्त्री या बटी हुई। सुघराई—दक्षता। ललित—सुन्दर, राग विशेष। गौरी—गौर वर्णीया स्त्री तथा रागिनी विशेष। सूहा—लाल रंग या राग विशेष। गूजरी—एक प्रकार का आभूषण।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१७)

सोहति बहुत भाँति चीर सौं लपेटी सदा,
जाकी मध्य दसा सो तौ मैन कौ निधान है।
तम कौं न राखै सेनापति अति रोसन है,
जा बिना न सूझै होत व्याकुल जहान है॥
परत पतंग मन मोहै तिन तरुन के,
जोति है रदन होति सुरति निदान है।
पूरी निधि नेह की उज्यारी दिपि देह की सु.
प्यारी तू तौ गेह की निदान समादान है॥

(१८)

चाहत सकल जाहि रति कै भ्रमर है जो,
जुवति हैास उरबसी की बिसाल है।
भली बिधि कीनी रस भरी नव जोबनी है,
सेनापति प्यारे बनमाली की रसाल है॥
धरति सुबास पूरे गुन कौ निवास अब,
फूली सब अंग ऐसी कौन कलि काल है।
ज्यौं न कुम्हिलाइ कंठ लाइ उर लाइ लीजै,
लाई नव बाल लाल मानौ फूल माल है॥

चीर—वस्त्र। दसा—अवस्था। निधान—आश्रय। रोसन—प्रदीप्त या प्रसिद्ध। पतंग—सूर्य या एक प्रकार का कीड़ा, पतिंगा। समादान—शमादान। हौस—हौंसला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(१९)

केस रहैं भारे मित्र कर सौं सुधारे तेरे,
तोही माझ पैयत मधुर अति रस है।
तपति बुझाइबे कौ हिय सियराइबे कौं,
रंभा तैं सरस तेरे तन कौ परस है॥
आज धाम धाम पुरइन है कहायो नाम,
जाके बिहसत मैलौ चंद कौ दरस है।
सेनापति प्यारी तेंही भुवन की सोभा धारी,
तू है पदमिनी तेरो मुख तामरस है॥

(२०)

जहाँ सुर सभा है सुबास बसुधा कौ सार,
जा मैं लहियत ऐरापति हू की गति है।
पेखे उरबसी ऐसी और है सुकेसी देखी,
द्युति मैनकाहू की जो हियरै हरति है॥
सेनापति सची जाकी सोभा ना कही बनति,
कलप लता बिना न कैसे हू रहति है।
जागरन कारी जाके होत हैं बिहारी मैं नि-
हारी अमरावती सी भावती लसति है॥

भारे--भारी। मित्र—सूर्य या दोस्त। तामरस—कमल।
ऐरावति—ऐरावत हाथी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२१)

पासे की निकाई सेनापति ना कही बनति,
सोरहै नरद करि रदन सुधारी है।
सोभा की बिसाति चौरै धरति बहुत भाँति,
चतुर है मुख गनि गनि डग धारी है॥
मार तैं बचाइ कोउ पाउ बिधि कीनौ जग,
जाके बस परैं संत कहत जुवारी है।
जीति की है निधि धन हार कौं धरति मीठी,
नारि निहचै कै मानौ चौपर सँवारी है॥

(२२)

प्रीतम तिहारे अनगन हैं अमोल धन,
मेरौ तन जात रूप तातैं निदरत हौ।
सेनापति पाइ परैं बिनती करै हू तुम्हैं,
देति न अधर ती जै तहाँ कौं ढरत हौ॥
चाट मैं मिलाइ तारे तौल्यौ बहु बिधि प्यारे,
दीनौ है सजीउ आप तापर अरत हौ।
पीछे डारि अधमन हम दीनौ दूनौ मन,
तुम्हैं तुम नाथ इत पाउ न धरत हौ॥

पासा—चौपड़ में खेला जाने वाला पाँसा या फंदा। नरद—नाद। बिसाति—आधार। तारे—नक्षत्र या आँखों की पुतली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२३)

बिरह हुतासन बरत उर ताके रहै,
बाल मही पर परी भूख न गहति है।
सेवती कुसुम हू तैं कोमल सकल अंग,
सून सेज रत काम केलि कौं करति है॥
प्रानपति हेत गेह अंग न सुधारै जाके,
घरी है बरस तन मैं न सरसति है।
देखौ चतुराई सेनापति कबिताई की जु,
भोगनी की सरि कौं बियोगनी लहति है॥

(२४)

मोती मनि मानिक रतन करि पूरी धन,
खरे भार भरी अनुकूल मन भाइ है।
जा घर बनिजु रहै ताही कौं सरस भाग,
ह्वै है सुखी सेनापति जब लछि पाइ है॥
तुम पतियार ताके तुम ही करन धारौ
तौहो बनि बल्ली नीकी लागि ठहराइ है।
मध्य रस सिन्धु मानौ सिंहल तैं आई वह,
तेरी आस नाउ गुन गहौ तीर आइ है॥

हुतासन—अग्नि। भोगिनी—साँपिन। सरि—समता। लछि पाइहै—देख पावेगा या धन पावेगा। पतियार—विश्वास या पतवार। आसना—प्रेमिका।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२५)

देखत नई है गिरि छतियाँ रहे हैं कुच,
निरखी निहारि आछे मुख मैं रदन हैं।
बरसनि सोरहै नवासी एक अगरी है,
मंद ही चलत भरी जोबन मदन है॥
केस मानौ तूल चौंर झलकत बाके बीच,
पट के कपोल सोभा धरन बदन है।
देखियत सेनापति हरे लाल चीर वारी,
नारी बुढ़िया निदान बसति सदन है॥

(२६)

मोती हैं दसन मनि मूंगा हैं अधर वर,
नैन इंद्रनील नख लाल बिलसत हैं।
मरकत ढंपन सौं कंचन कलस कुच,
चरन पदमराग सोभा सरसत हैं॥
प्यारी कोठरी है धन जोबन जवाहिर की,
तहाँ सेनापति चित जइ कै धसत हैं।
तासौं लगे तारे फेर तारी न लगति क्यौं हूं,
जाइ बिधे मन तेब कैसे निकसत हैं॥

तूल—तुल्य, कपास। इन्द्रनील—नीलम। पदमराग—एक प्रकार की मणि या लाल कमल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२७)

औरै भयौ रुख तातैं कैसे सखी ज्यारी होति,
बिफल भए हैं बंद कछु न बसाति है।
गोसे न मिलत कैसे तीर को सँजोग होत,
पहिली नवनि लही जाति कौन भाँति है॥
सेनापति लाल स्याम रंग चित चुभि रह्यौं,
कैसे कै कठिन रितु पाउस बिहाति है।
आवति है लाज कर गहैं पंच लोगनि तैं,
कान्ह फिरि गये ज्यौं कमान फिरि जाति है॥

(२८)

अरुन अधर सोहै सकल बदन चंद,
मंगल दरस बुध बुद्धि कै बिसाल है।
सेनापति जासौं जुव जन सब जीवक हैं,
कवि अति मंद गति चलति रसाल है॥
तम है चिकुर केतु काम की विजय निधि,
जगत जगमगत जाके जोति जाल है।
अंबर लसति भुवगति सुखरासिन कौं,
मेरे जान बाल नवग्रहन की माल है॥

गोसे—एकान्त। तीर—समीप, बाण। अरुन—लाल। नवग्रह—सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नवग्रह हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२९)

बदन सरोरुह के संग ही जनम जाकौ,
अंजन सुरंग समता न परसत है।
महारुखौ मुनि हू कौं हियौ चिकनाइ जात,
सेनापति जाहि जब नैक दरसत है॥
रूपहिं बढ़ावै सब रसिकन भावै मीठौ,
नेह उपजावै पै न आप बिनसत है।
आली बनमाली मन फूल मैं बसायौ तेरे,
तिल है कपोल सो अमोल बिलसत है॥

(३०)

करन छुवत बीच ह्वै के जात कुंडल के,
रंग मैं करैं कलोल काम के सुभट से।
चंचल समेत भुव अंबर मै खेलत हैं,
देखत ही बाँधैं डीठि रहैं चटपट से॥
उन्नत सगुन सुद्ध बंस देखि लागैं धाइ,
केलि कला करैं चितै मोहत निपट से।
सेनापति प्रभु बरुनी के बस कीने प्यारी,
नाचत ललन आगे नैना तेरे नट से॥

सरोरुह—कमल। अमोल—अमूल्य। डीठि—दृष्टि।
बीच—तरंग। चटपट—चपल। ललन—प्रियनायक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३१)

औसरैं हमारे और बालै हिलि मिलि रमै,
ईठ महा ढीठ ऐसे कैसे कै निबहियै।
सेनापति बहुत अवधि बितै आयौ स्याम,
समय है उराहने कौ कछू कह्यौ चहियै॥
आदर दै राखै होति प्रगट अधीरताई,
होति हित हानि जौ निदान जान कहियै।
याही तैं चतुर चतुराई सौं कहति मेरे,
भूलि कै भवन भरतार जनि रहियै॥

(३२)

केसौ अति बड़े जहाँ अरजुन पति काज,
अति गति भली बिधि बाजी की सुधारी है।
मनी सौं करन बीर संग दुरजोधन के,
संतनु तनै निहारि सुरत्यौ बिसारी है॥
सोहत सदा नकुल कौ है सील सेनापति,
देखियै सु भीमसैन अंग दुति भारी है॥
जाके कहैं आदि सभा परबस परति सो,
भारत की अनी किधौं बनी बर नारी है॥

औसरैं—अवसर पर। बाजी—घोड़ा। केसौ—श्रीकृष्ण या केश। तनै—पुत्र को। संतनु तनै—भीष्म। सुरत्यौ—बुद्धि या विवेक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३३)

राख्यौ धरि लाल रंग रंगित ही अंबर मैं,
परी अवगुन गाँठि जातैं ठहरात है।
जोबन की रती सौं मिलाइ धर्यौ भली भाँति,
काम की अगिनि हू सौं जरि न बुझात है॥
पति है अरगजा की महिमा तैं सेनापति,
यातैं अति रति सुख नासि कै सुहात है।
सुख कौ निधान मिलै त्रिविध जगतप्रान,
मान उड़ि जात ज्यौं कपूर उड़ि जात है॥

(३४)

रहै अपसर ही की सोभा जो अनूप धरि,
सुभग निकाई लोने चतुर सु नारी है।
सेनापति ताके मन बालमैं रहैं जु एक,
मूरति जगत मैं न रतन सुधारी है॥
देखैं प्रीति बाढ़ी और बाल छबि डाढ़ी सदा,
सुभ गहनै धरै सुअंग दुति भारी है।
लौंग सो लुगाई करि बानी छल गाई ताही,
भाँति द्वै लगाई जिन भेद सौं बिचारी है॥

पति—प्रतिष्ठा या स्वामी। नासिकै—नष्ट करके या नाक को। अपसर—अप्सरा, वाष्पकण। लुगाई—स्त्री। लौंग—नाक में पहनने की कील।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३५)

सदा नंदी जाकौं आसा कर है बिराज मान,
नीकौ घनसार हू तैं बरन है तन कौं।
सैन सुख राखै सुधा दुति जाके सेखर है,
जाके गौरी की रति जो मथन मदन कौं॥
जो है सब भूतन कौ अंतर निवासी रमैं,
धरै उर भोगी भेष धरत नगन कौं।
जानि बिन कहै जानि सेनापति कहै मानि,
बहुधा उमाधव कौं भेद छाँड़ि मन कौं॥

(३६)

जात है न खेयौ क्यों हू बल्ली न लगति नीकी,
सोचत अधिक मन मूढ़ सब लोग कौं।
नदीन कौ नाथ यातैं पैरत न बनै काहू,
सेनापति राम बीर करता असोग कौं॥
दीरघ उसास लेत अहि रहै भारी जहाँ,
तिमिर है बिकट बतायौ पंथ जोग कौं।
कान्ह के अछत कुंज कामकेलि आगर ही,
तेई बिन कान्ह भईं सागर बियोग कौं॥

गौरी—पार्वती, उज्वल। रमै—रमता है या लक्ष्मी को। नगन—नग्न, पर्वत। उमाधव—उमा के पति महादेवजी। बल्ली—लता, डाँड़। तिमि—अंधकार। जोग—योग, उपाय। आगर—दक्ष।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३७)

नाहीं नाहीं करैं थोरी मांगैं सब दैन कहैं,
मंगन कौं देखि पट देत बार बार हैं।
जिनकौं मिलत भली प्रापति की घटी होति,
सदा सब जन मन भाए निरधार हैं॥
भोगी ह्वै रहत बिलसत अवनी के मध्य,
कन कन जोरैं दान पाठ परिवार हैं।
सेनापति बचन की रचना बिचारौ जामैं,
दाता अरु सूम दोऊ कीने इकसार हैं॥

(३८)

थोरौ कछू मागे होत राखत न प्रान लगि,
रूखे मन मौन ह्वै रहत रिस भरि हैं।
आपने बसन देत जोरिबे की रति लेत,
बितरत जात धन धरा ही मैं धरि हैं॥
जाँचत ही जाचक सौं प्रगट कहत तुम,
चिंता मति करौ हम सो असान करि हैं।
बानी द्वै अरथ सेनापति की बिचार देखौ,
दाता अरु सूम दोऊ कीने सरवरि हैं॥

पट—दरवाज़ा, वस्त्र। प्रापति—आय। घटी—घड़ी, कमी। भोगी—भोग करने वाला, सर्प। रिस—क्रोध। बितरत—बाँटना। धरा—पृथ्वी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३९)

सब अंग थोरे थोरे बहुधा रतन जोरैं,
राखैं मुख ऊपर हूं जे न इतवार हैं।
नान्हैं बोल बोलैं सभै देखत न पट खोलैं,
राज धन राखिबे कौं पाये अवतार हैं॥
जनम तैं कौहू जे न भरम तें मागे जात,
सत्तहीन आगे सदा राखत न कार हैं।
कामहिं न आवैं सेनापति कौं न भावैं दोऊ,
खोजा अरु सूम सम कीने करतार हैं॥

(४०)

खेत के रहैया अति अमल अरुन नैन,
ओर के असील गुन ही के जे निकेत हैं।
जगत बिदित कलि काल के करन हारे,
नाहिनै समर कहूं विजय समेत हैं॥
सेनापति सुमति बिचारि ऐसे साहिबन,
भजौ परबीन जातैं आस बस चेत हैं।
द्विजन कौं रीझि मनि कंचन गनिकै देत,
रीझि देत हाथी कौं सहज बाजी देत हैं॥

पट—घूँघट, वस्त्र, दरवाज़ा। खोजा—हिजड़े। अमल—नशा। असील—दुर्विनीत। बाजी—बजंतरी, घोड़ा। ओर—आरम्भ। निकेत—खजाना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४१)

अमल अखंड चाउ रहै आठ जामै ऐसी,
तेरी पूरी रती सौं छमासौ सुधरायौ है।
नरजा मैं मिलै पलरा मैं देखि दूनौ सोई,
सेनापति समुझि बिचारि कै बतायौ है॥
काहू मैं है घटि अरु काहू मैं अधिक झूठौ,
तामैं पूरौ चौकस समान मैं बतायौ है।
तोलियत जासौं जगत कौ सुबरन रूपौ,
सो बारह मासी तोरा तोहि बनि आयौ है॥

(४२)

जनम कमीन भौन बीर जुद्ध भीत रहैं,
मेवन मैं सदा मन राखत सहेत हैं।
लंगर के दाता अरु भूखन कनक देत,
एक साधु मनै बीस बिस्वा राखि लेत हैं॥
सेनापति सुमति समुझि करि सेवौ इन्हैं,
एतौ जग जानै अवगुन के निकेत हैं।
दादनी की बेर जब देनी होत सौ की ठौर,
बड़े हैं निदान तब दोसै एक देत हैं॥

रती—रत्ती, प्रीति। छमासौ— छः माशे, पृथ्वी के समान क्षमाशील। नरजा—तराजू की डंडी। पलरा—तराजू का पल्ला। बारहमासी—सदा बहार या बारहमाशे वाला। तोरा—आभूषण विशेष। कमीन—नीच। सहेत—प्रेमियों के मिलने का स्थान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४३)

गीतहि सुनावै तिलकन झलकावैं भुज,
मूलन छपावैं द्वारका हू के पयान हो।
बैसनव भेस भगतन की कमाई खाहिं,
सेवैं हरि साहिबै न साँच है निदान ही॥
देखि कै लिबास नीची सबनि की नारि होति,
मोहि कै बिकच करैं मन धन ध्यान ही।
सेनापति सुमति बिचारि देखौ भली भाँति,
कलि के गुसाँईं मानौ माँगना समान ही॥

(४४)

मालै हठि लै कै भले जन ए बिसारैं राज,
भोग ही सौं काज रीति करैं न बरत की।
लेहिं कर मुद्रा देह बुरी यों बनावैं छाँड़ि,
निगम को संक अब लाज न रमत की॥
पाइ पकरावैं जो निदान करैं उपदेस,
राग उतसव ही सौं केलि जनमत की।
सेनापति निरखि बिचारि कै बताये देखौ,
कलि के गुसाईं मानौ माँगना जगत की॥

पयान—यात्रा। लिबास—भेष। बिकच—मुड़ा हुआ, विकसित। बरत—व्रतादि। मालै—माला या माल। मुद्रा—छाप या रुपया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४५)

पावन अधिक सब तीरथ तैं जाकी धार,
जहाँ मरि पापी होत सुरपुर पति है।
देखत ही जाकौं भलौ घाट पहिचानियत,
एक रूप बानी जाके पानी की रहति है॥
बड़ी रज राखैं जाकौ महा धीर तरसत,
सेनापति ठौर ठौर नीकियै बहति है।
पाप पतवारि के कतल करिबे कौं गंगा,
पुन्य की असील तरवारि सी लसति है॥

(४६)

तेरे भूखन हैं याते ह्वै है न सुधार कछू (?)
बाढ़ैगौ त्रिविध ताप दुख ही सौं दहि है।
सेइ तू गुरू चरन जीति काम हू कौं बल,
वेद हू कौं पूछि तो सौं यहै तत्त कहि है॥
कुपथ कौ छाड़ौ गहौ सुपथ कौं सेनापति,
सिछा लेहु मानि जानि सदा सुख लहिहै।
अच्युत अनंत काहि प्रात सात पुरीन कौं,
करम करम लेह अमर ह्वै रहि है॥

पावन—पवित्र। घाट—जलाशय के तट पर स्नानादि का स्थान, तलवार की धार। बानी—आदत। पतवारि—नाव का पतवार। गुरुचरन—गुरु के चरण, (गुरुच रन) बनैली गुर्च।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४७)

तीर तैं अधिक बारि धार निर्धार महा,
दासन मकर चैन होत है न दीन कौ।
होति है करक अति बड़ी न सिराति राति,
तिल तिल बाढ़ै पीर पूरी बिरहीन कौं॥
सीरक अधिक चारि ओर अवनी रहै,
पांउरीन बिना क्यौं हू बनत धनीन कौं।
सेनापति बरनी है बरषा सिसिर रितु,
मूढ़न कौं अगम सुगम परबीन कौं॥

(४८)

नारी नेह भरी कर हियै है तपति खरी,
जाकौं आध घरी बीतै बरख हजार से।
उठत भभूके उर डारत गुलाल हू के,
नवल बधू के अंग तचत अँगार से॥
सीरी जानि छाती धरी बाल के कमल माल,
सेनापति जाके दल सीतल तुषार से।
लागत न बार बिन हरि के बिहार ताही,
हार के सरोज सूखि होत हैं सुहार से॥

सुथरी—स्वच्छ। मकर—मछली, माघ का महीना। करक—कड़कड़ाटह, रुक रुक कर होने वाली पीड़ा। पांउरी—खड़ाऊँ, दालान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(४९)

द्विजन की जामै मरजाद छूटि जात भेष,
पहिले बरन कौं न तन कौ निदान है।
अंब छबि लीन स्रुति धुनि सुनियै न मुख,
लागी अब लार है न नाक हू कौ ज्ञान है॥
देखियै जबन सोभा घनी जुगलीन माँझ,
नाम हू सौं नातौ कृष्ण केसौ कौं जहाँ न है।
सेनापति जामैं जग आसा ही सौं भटकत,
याही तैं बुढ़ापौ कलि काल के समान है॥

(५०)

कुस लव रस करि गाई सुरधुनि कहि,
भाई मन संतन के त्रिभुवन जानी है।
देवन उपाइ कीनौ यहै भौ उतारन कौं,
बिसद बरन जाकी सुधा सम बानी है॥
भुवपति रूप देह धारी पुन्न सील हरि,
आई सुरपुर तें धरनि सिय रानी है।
तीरथ सरब सिरोमनि सेनापति जानी,
राम की कहानी गंगाधार सी बखानी है॥

नेह—स्नेह, घी। भभूका—लपट। सीरी—शीतल। तुषार—पाला। हरि—श्रीकृष्ण, अग्नि। सुहार एक तरह का नमकीन पकवान। झर—झड़ी, ताप। भा दव—दावाग्नि की लपट, भादौं महीना। तरनि—सूर्य।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५१)

सूरबली बीर जसुमति कौ उज्यारौ लाल,
चित्त कौं करत चैन बैनहि सुनाइ कै।
सेनापति सदा सुर मनी कों बसी करन,
पूरन कर्‌यौ है काम सब कौं सहाइ कै॥
नगन सघन धरै गाइन कौं सुख करै,
ऐसौ तैं अचल छत्र धर्‌यौ है उचाइ कै।
नोके निज ब्रज गिरिधर जिमि महाराज,
राख्यौ है मुसलमान धार तैं बचाइ कै॥

(५२)

बानरन राखै तोरि डारत है अरि लंकै,
जाके बीर लछन बिराजत निदान है।
अंगद कौं राखै बाहु दुरि करै दूषन कौं,
हरि सभा राजै राज तेज कौ निधान है॥
आनंद मगन दृग देखि जाहि सिय रानी,
सेनापति जाके हेम नगर कौं दान है।
महाबली बीर बसुदेव कौ कुंवर कान्ह,
सो तौ मेरे जान राजा राम के समान है॥

द्विजन—ब्राह्मणों या दाँतों। स्रुति—कान, वेद। जवन—यवन, जब न। आसा—तृष्णा, डंडा। उज्यारौ—कान्तिमान। वैन—वचन, बंसी। गाइन कौं—गौओं को या गवैयों को।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५३)

दिन दिन उदै जाकौं जातें है मुदित मन,
देखियै निसान जाके आये अति चाइ कै।
सूर कै बखाने जाहि सब कौं कहै सनेही,
बैरी महा तम जातें जात है बिलाइ कै॥
सूरति सरस सब बार है लसति जाकी,
सेनापति जो है पदमिनि सुखदाइकै।
पूत दसरथ कौ सपूत रघुबीर धीर,
देख्यौ राजा राम बली मानौ दिन-नाइ कै॥

(५४)

तब की तिहारी हँसि हिलनि मिलनि वह,
देखि जिय जानी हरि बस करि पाए हौ।
सेनापति अधिक अयानी मैं न जानी तुम,
जेंवत ही वाके अँचवत ही पराए हौ॥
बीते औधि आरत त्रियान कौं बिसारत हौ,
धारत न पाउँ बेग कहौ कित छाए हौ॥
पहिले तौ मन मोहौ पीछे कर तन मोहौ,
प्यारे तुम साँचे मन मोहन कहाए हौ॥

बनरन राखै—बंदरों को रखता है, रण में अपना हठ रखता है। अंगद—बालि का पुत्र, बाजूबंद। हरि—श्रीकृष्ण, बंदर। उदै—उदय, बढ़ती। सूर—वीर, सूर्य या अंधा। महातम—गाढ़ अंधकार या माहात्म्य। पदमिनी—कमलिनी, लक्ष्मी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५५)

जीतत कपोल कौं तिलोत्तमै अनूप रूप,
बात बात ही मैं मंजु घोषै बरसति है।
देखी उरबसी मैनका हू मैं सरस दुति,
जंघ जुग सोभा रंभा हू कौं निदरति है॥
सची बिधि ऐसी और कहौ धौं सु कैसी नारि,
सदा हरि भावते की रति कौं करति है।
जाके है अधर सुधा सेनापति बसुधा मैं,
प्यारी सुरपुर हू के सुख बरसति है॥

(५६)

अधर कौ रस गेहें कंठ लपटाइ रहैं,
सेनापति रूप सुधाकर तैं सरस है।
जे बहुत धन के हरन हारे मन के हैं,
हीतल मैं राखे सुख सीतल परस है॥
आवत जिनके अति गजराज गति पावै,
मंगल है सोभागुरु सुंदर दरस है।
और है न रस ऐसौ सुनि सखी साँची कहौं,
मोतिन के देखिबे कौं जैसौ कछू रस है॥

अयानी—अजान। तिलोत्तमै—तिलोत्तमा अप्सरा, कपोल पर उत्तम तिल को। मंजु—मनोहर। घोष—नाद। दुति—शोभा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५७)

राधिका के उर बढ़्यौ कान्ह कौ बिरह ताप,
कोने उपचार पै न होति सितलाइयै।
गुरु जन देखि कही सखिन सौं मन मैं को,
सेनापति करी है बचन चतुराइयै॥
माधव के बिछुरे तैं पल न परत कल,
परी है तपति अति मानौ तन ताइयै।
सौंह बृखभान की न रहै तो जरनि कछू,
छाया घनस्याम की जो पूरे पुन्न पाइयै॥

(५८)

तेरे उर लागिबे कौं लाल तरसत महा,
रूप गुन बाँध्यौ तू न ताकौं उमहति है।
यह सुनि बाल जौ लौं ऊतर कौं देइ तौलौं,
आइ परी सास बात कैसे निबहति है॥
रूखी जौ कहति तौ तौ प्रीति न रहति जीव,
नेह की कहति सास डाटनि दहति है।
सेनापति या तैं चतुराई सौं कहति बलि,
हार करौ ताहि जाहि लाल तू कहति है॥

गुरु—बृहस्पति, भारी। मोतिन के—मोतियों के (मो तिनके) मुझे उनके। हीतल—हृदय तल में। सितलाइयै—ठंडक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(५९)

बिरह बिहाल उपचार तैं न बोलै बाल,
बोली जो बुलाई नाम कान्ह कौं सुनाइ कै।
याही तैं सकानी सास ननद जिठानी तिनैं,
देखि कै लजानी सोचि रही सिर नाइ कै।
मेट्यौ है कलंक बे निसंक गुरु जन कीने,
राख्यौ हरि नेह बात यौं कही बनाइ कै।
को है? कित आई? सेनापति न बसाई सखी,
कान्ह कान्ह करि कल कान कीनी आइ कै॥

(६०)

कुबिजा उर लगाई हम हूं उर लगाई (?)
पी रहै दुहू के तन मन वारि दीने हैं।
वे तौ एक रति जोग हम एक रति जोग,
सूल करि उनके हमारे सूल कीने हैं॥
कूबरी यौं कल पैहै हम इहाँ कलपैहैं,
सेनापति स्यामैं समुझैं यौं परबीने हैं।
हम वे समान ऊधौ कहौ कौन कारन तैं,
उन सुख माने हम दुख मानि लीने हैं॥

तरसत—तरसता है। ऊतर—उत्तर। दारनि—फटकार।
बलि—सखी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६१)

देखत न पीछे कौं निकासि कैयौ कोसन तैं,
लै कै करबाल बाग लेत बिलसत हैं।
साहस की ठौर भीर परे तैं सिर कटा हैं,
सकतिन हू सौं लरिकान कौं तजत हैं॥
राखत न गारौ रज पूरे रहैं समर मैं,
सदा कर करैं सरन कौं जे तकत हैं।
सेनापति बीर सौं लरत हाथ जोरत हैं,
तातैं सूर कातर समान से लगत हैं॥

(६२)

कोट गढ़ गिरि ढाहैं जिनकौं दुरग ना हैं,
बल की अधिक छबि आरबी सहित हैं।
देखियै जिन मैं सदा गति अति मंद भारी,
मानौं ते जलद ते जकरि राखे नित हैं॥
डगनि चलत महा करिनी के बस राखे,
सब कहैं सिंधुर हैं दरद रहित हैं।
सेनापति बरने हैं महाराज राम जू के,
हाथी हैं सुधारे असवारी के उचित हैं॥

वारि दीने—निछावर कर दिया। सूल—पीड़ा। बाग—लगाम, वाटिका। करवाल—तलवार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६३)

पूरत हैं कामैं सत्यभामा सुखसागर हैं,
पारिजात हू कौं जीति लेत जोर करके।
सदा सुख सोहे सेनापति बल बीर धीर,
राखत विजय बाजी मध्य जो समर के॥
रूप है अनूप सुरमनी कौं बसीकरन,
जाकौं बैन सुनैं चैन होत नर बर के।
नंदन नरिंद दसरथ जू कौं रामचंद,
ताके गुन मानौं बसुदेव के कुँवर के॥

(६४)

बीरैं खाइ रही तातैं सोहति रकतमुखी,
नांगी ह्वै नची है संख तजि अरि भीर की।
निरवारै बारन बिसारै पुनि हार हू कौं,
आड़ हू भुलावै नख सिख भरी नीर की॥
सेनापति पियन कौं राखै सावधान धार,
आगे ही चलावै घात जानि जो सरीर की।
जापर परति ताहि लाल करि डारै मारि,
खेलत समर फाग तेग रघुबीर की॥

आरवी—भीषण शब्द। करिनी—हथिनी। दरद—पीड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६५)

चढ़े पै त्रिभंगी रस ह्वै मैं जे न सूधे होत,
सहज की स्याम ताई सुन्दर लहत हैं।
सेनापति सिर धरि सेए लाज छाँड़ि तातैं,
रूखे गुरुजन बैन रूखेई कहत हैं॥
हरि कौं सुनाइ कहै सखिन सौं हरिन-नैनी,
कान चतुराई परे कान्ह उमहत हैं।
और की कहा है सुमन के नेह चिकनाए (?)
मेरे प्रानप्यारे केसौ रूखे से रहत हैं॥

(६६)

घर के रहत जाके सेना पैयै सुख,
जातैं होत प्रान समाधान भली भाँति है।
जाकी सुभ गति देखे मानियै परम रति,
नैक बिन बोले सुधि-बुधि अकुलाति है॥
देखत ही देखत बिलानी आगे आँखिन के,
कर गहि राखी सो न क्यौंहू ठहराति है।
रस दै कै राखी सरबस जानि बारे बार,
नारी गई छूटि जैसे नारी छूटि जात है॥

त्रिभंगी—कुटिल, घुंघराले। रस—जल, केलि। उमहत—उमंग में आना। समाधान—संतोष। बिलानी—लीन हुई। रस—प्रीति, वैद्यक सम्बन्धी भस्म विशेष। नारी—स्त्री, नाड़ी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६७)

जाकी जोति पाइ जग रहत जगमगाइ,
पाइन पदमिनी समूह परसत है।
जाके देखैं अतर कमल बिगसत चैन,
पाइ कै खुलत नैन सुख सरसत है॥
धाम की है निधि जाके आगे चंद-मंद दुति,
रूप है अनूप मध्य अंबर लसत है।
मूरति सरस सब बार है लसति जाकी,
सोई मित्त सेनापति चित्त मैं बसत है॥

(६८)

तारन की जोति जाहि मिले पै बिमल होति,
जाके पाइ संग मैं न दीप सरसत है।
भुवन प्रकास उर जानियै ऊरध अध,
सोउ तही मध्य जाके जगतै रहत है॥
कामना लहत द्विज कौसिक सरब बिधि,
सज्जन भजत महातम हित रत है।
सेनापति बैन मरजाद कबिताई की जु,
हरि रवि अरुन तमी कौं बरनत है॥

बिगसत—विकसित। धाम--ज्योति, घर। मित्त—मित्र, सूर्य। तारन—नक्षत्र, पुतली। जगतै--संसार को, जागृति। द्विज-ब्राह्मण, पक्षी। कौशिक-विश्वामित्र, उल्लू। तमी-रात्रि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(६९)

प्रबल प्रताप दीप सात हू तपत जाकौं,
तीनि लोक तिमिर के दलन दलत है।
देखत अनूप सेनापति रामरूप रवि,
सबै अभिलाष जाहि देखत फलत है॥
ताही उरधारौं दुरजन कौं बिसारौं नीच।
थोरौ धन पाइ महा तुच्छ उछरत है।
सब बिधि पूरौ सुर वर सभा रूरौ यह,
दिनकर सूरौ उतराइ न चलत है॥

(७०)

तेरे नीकी बसुधा है वाके तौ न वसुधा है,
तू तौ छत्रपति सो न छत्रपति मानियै।
सूर सभा तेरो जोति होति है सहसगुनी,
एक सूर आगे चंद जोति पै न जानियै॥
सेनापति सदा बड़ी साहिबी अचल तेरी,
निसि दिन चंद चल जगत बखानियै।
महाराज रामचंद चंद तैं सरस तू है,
तेरी समता कौं चंद कैसे मन आनियै।

दीप—द्वीप। तिमिर—अज्ञान, अंधकार। दुरजन—दुष्ट-जन, (दु + रजन) दुष्ट रात्रि। धन—राशि, संपत्ति। वसुधा—पृथ्वी। छत्रपति—राजा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७१)

अँखियाँ सिराती ताप छाती की बुझाती रोम,
रोम सरसाती तन सरस परस ते।
रावरे अधीन तुम बिन अति दीन हम,
नीर हीन मीन जिमि काहे कौं तरसते॥
सेनापति जीवन अधार निरधार तुम,
जहाँ कौं ढरत तहाँ टूटत अरस ते।
उनै उनै गरजि गरजि आये घनस्याम,
ह्वै कै बरसाऊ एक बार तौ बरसते॥

(७२)

पर कर परै यातैं पाती तौ न दीनी लाल,
कीनी मनुहारि सो सभा मैं कत भाखियै।
बानी सुनि दूती की जिठानी तैं सकानी बाल,
सोचि रही ऊतर उचित कौन आखियै॥
सेनापति तौहीं परबीन बोली बीन जिमि,
दुहुन की संक सब दूरि करि नाखियै।
पाती पाती कहै कोऊ लावै जो कहूं की पाती,
दै कै सिरपाउ तौ हरा मैं बाँधि राखियै॥

अरस—आकाश, स्वर्ग। घनश्याम—श्रीकृष्ण, काला मेघ। मनुहारि—विनती। आखियै—कहना चाहिये। नाखियै—नष्ट करके। पाती—पत्र। सिरपाउ—पगड़ी, सिर में पैर मारना। हार में—हार में, (हरामैं) हरामी को।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७३)

कीने नारि नीचे बैठी नारी गुरुजन बीच,
आयौ है सँदेसौ तौहीं रसिक रसाल कौं।
सेनापति देखत ही जानि सब जानि गई,
कह्यौ पर ऊतर उचित ततकाल कौं॥
होइ ज्यौं सरस काम फोकौ है कनक धाम,
देहुँ तोहि कुंदन जो माल है बिसाल कौं।
बोलि कै सुनारी भावते कौं तेरी बलिहारी,
चोकी मेरी देह तू सँजोग कोई लाल कौं॥

(७४)

जेती बन बेली ओर तिनकी न कीजै दौर,
राखु मन एक ठौर नीके करि बसि मैं।
देखिकै गुराई चिकनाई बार बार भूलि,
मति ललचाहि धीरता ही कौं अब समैं॥
सेनापति स्याम रंग सेइ कै सुखित ह्वै है
कह्यौ है उपाइ समुझाइ कै सरस मैं।
पीरे पान खाइ नीरैं चूकि कै न जाइ मान,
खई मिटि जायगी अरूसे ही के रस मैं॥

नारि—गर्दन। जानि—जानकार। कुंदन—उत्तम जाति का सोना। सुनारी—सुनारिन, अच्छी स्त्री। चोकी—सुन्दर, गले में पहनने का आभूषण। भावते—प्यारे। नीरैं—जल के पास, समीप। खई—क्षयी, झगड़ा। अरूसे—अडूसा (अ+ रूसे) बिना रूठे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७५)

मोती माल पोहत ही सखि न मैं सोहत ही,
मोहत ही मन मृग नैनी होइ भाइ कै।
आयौ है अचानक तहाँई कान्ह बानक सौं,
प्यारो रस बस भई निरखत चाइ कै॥
सेनापति चातुर सखी के मिस आतुर ह्वै,
आप ही कहति ताहि बचन सुनाइ कै।
हित करि चित दै कै मोतियै परखि लै कै,
आज लाल रेसमै सकल करु आइ कै॥

(७६)

छूटे आवै काज भिन्न करत सँजोए साज,
अवगुन गहै नेह रूप सरसात है।
तीछन करयौ है जातैं होति पति जीति करै,
लाल उर लागे अरि गात सियरात है॥
सेनापति बरने समान करि दोऊ तिनैं,
जानत हैं जान जाके ज्ञान अवदात है।
निसान कौं पाइ परै धन ही के अंतर तैं,
छूटि जात मान जैसे बान छूटि जात है॥

पोहत ही—पिरोते ही। मोतियै—मोती को, मुझ स्त्री को। रेसमै—रेशम को, (रेसमै) रे! समय को। साज—उपकरण, ठाट बाट। अवदात—शुद्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७७)

आनंद कौं कंद मुख तेरौ ता समान चंद,
कैसे करि कीजियै कलेस नाम धारी है।
आठ हू पहर कर तेरे ताप-हर कंज,
बिस कौं प्रसून कैसे होत अनुकारी है॥
तेरी सुखदाई देह जोति की न सम होति,
केसरि सरिस कहियत कष्टवारो है।
सेनापति प्रभु प्रान प्यारी तू अनूप नारी,
तेरी उपमा को भाँति जाति न बिचारी है॥

(७८)

हरि न है संग बैठी जोबन जुगारति है,
तिन ही कौ मन बच क्रम उमहति है।
जाकौं मन अनुराग बस ह्वै कै रह्यौ मधु,
बड़े-बड़े लोचननि चंचल चहति है॥
सेनापति बार बार खेलत सिकार तहाँ,
मदन महीप तातैं सुख न लहति है।
कुंज कुंज छाँह तन तपति बरावति है,
हरिनी ज्यों ब्रज की बिरहिनी रहति है॥

कलेस—कष्ट, कलाओं का ईश। प्रसून—फूल। जुगारति है—नष्ट करती है। तिनही को—उन्हीं को, घास ही को। मधु—शहद, अमृत, पानी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(७९)

प्यारौ परदेस जाके नीकी मसि भीजति है,
अंजन की सोभा के समूह सरसत हैं।
कंत कौं मिले तैं कल मन कौं करति ऐसी,
प्यारी है सदन अंग बिरह तपत हैं॥
सेनापति काम हू की बार है खरी भुलाई,
बावरे से भूले मन दंपति रहत हैं॥
पानहिं न लेत कर दोऊ अदभुत कर,
कैसे-धौं परसपर पाती कौं लिखत हैं॥

(८०)

कमलै न आदरत रागै अरुन धरत,
चित्त कौं बस करत फूलन मैं न रमैं।
लै चलैं परमहंस गति महा उर राचैं,
जो हरि सौं मिलि रहैं आठ हू पहर मैं॥
करत सफल सब जीवन जनम जग,
जिनके प्रसंग सुख पावैं सुरतरु मैं।
सेनापति बरने हैं प्यारी के चरन जग,
ताकी सब भाँति पाई जाति मुनिवर मैं॥

मसि भीजति है—रेखैं उठ रही हैं। कमलै—कमल को, लक्ष्मी को।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(८१)

मिलत ही जाके बढ़ि जात घर मैंन चैन,
तन कौं बसन डारियत बगराइ कै।
आवत ही जाके नीकौ चंद न लगत प्यारी,
छाया लोचन की चाहियत सुखदाइ कै॥
जाही के अरुन कर पाइ अब नित पति,
सुखित सरस जाके संगम कौं पाइ कै।
ग्रीषम की रितु बर बधू की समान करी,
सेनापति बचन की रचना बनाइ कै॥

(८२)

निरखत रूप हरि लेत गद ही कौं सब,
सूल है सु नीकौ कछू कह्यौ न परत है।
अंगना सरूप यातैं भावति जो नाहैं नारि,
जोवत ही जाकौं मुख सो मन बरत है॥
चित मैंन आवै नैक सरस कौं देखत ही,
तन तरुनापौ देखैं चित उत रत है।
सैनापति प्यारी कौं बखानी कै कुप्यारी हू कौं,
बचन के पेच पटतर ही करत है॥

कर—हाथ, किरण। सुखित—सूखी, सूखी। अंगना—स्त्री, आँगन। जोवत—देखते ही। तरुनापौ—युवावस्था। पटतर—तुलना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(८३)

कल है करति सब द्यौस निसाकर मुखी,
पन ही कौं पाइ कै सुधाई पकरति है।
देखत ही भावै नर मन कौं अब निकाई,
करति न कबहूँ जो हिय मैं अरति है॥
निरखत सोभा नारि है न एक काम हू की,
धनी सौं बहसि दौरि लागियै रहति है।
सेनापति कहै अचरज के बचन देखौ,
भावती की सेज अन भावती करति है॥

(८४)

घर तैं निकसि करि मार गहि मारत हैं,
मन मैं निडर बन तीरथ करत हैं।
संतन के पैंड़ै परैं कुसै लै सदा ही चलैं,
पर धन हरिबे कौं साध न करत हैं॥
नागा करमन कौं करत दुरि छिपि पीछे,
हरि मैं परत कै वे सूली मैं परत हैं।
सेनापति धुनि महा सिद्ध मुनि जस कर,
ताहि मुनि तसकर त्रासन मरत हैं॥

पन—अवस्था। धनी—पति। भावती—भानेवाली। सेज—बराबरी। नागा—अंझा। हरि—विष्णु, सिंह। सूली—फाँसी, शिवजी। तसकर—चोर, वैसा करके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(८५)

रैनि ही के बीच पाँउ धरि लाल रंग भरि,
होति जो कहनि महा रति रस डौर की।
सोभा परि नैन कौं बनाइ कर गहैं आइ,
जो मुँह लगाई है भुलाई सुधि और की॥
चीर कै कुसुंमी बर बागौ सुधरत जातैं,
सदा सुख संगिनी रसिक सिर मौर की।
बरनि कै प्यारी पन रत है बताई कबि,
सेनापति मति कौं सराहै कौन दौर की॥

(८६)

आप ईस सैल ही मैं अलकैं बहुत भाँति,
राखत बसाइ उत मानत सुरति हौ।
धनि हैं वे लोक आसा पालत जिनकी तुम,
संतत रहत तजे दच्छिन की गति हौ॥
सेनापति ईठ है न एक सी तिहारी डीठि,
निरखत सब ही कौं लाल द्वै जुगति हौ।
धरौ निधि नील बास उत्तर सुधारत हौ,
आए हौ कुबेर जु बहुत धनपति हौ॥

ईस—शिव। अलकैं—अलकापुरी को। ईठ—प्रिय, मित्र। निधि—कुबेर की ९ प्रकार की निधि या खजाने हैं, पद्म, महा-पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुंद, नील तथा वज्र।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(८७)

तजत न गाँठि जे अनेक परबन भरे,
आगे पीछे और और रस सरसात हैं।
गढ़ि गढ़ि छोलैं भली भाँति बोलैं आदर सौं,
तपति हरन हिय बीच सियरात हैं॥
सेनापति जगत बखाने जे रसाल उर,
बाढ़े पित्त कोप जिन तैं न ठहरात हैं।
मानहु पियूष बाढ़ै स्रवन की भूख माह,
पूख कैसे ऊख बोल रावरे मिठात हैं॥

(८८)

छतियाँ सकुच बाकी को कहै समान तातैं,
न रन तैं मुरै सदा बीर है करन मैं।
सबै भाँति पन करि बलमहिं पाग राखै,
तेज की सुनै तैं आप मानै मान खन मैं॥
अबला लै अंक भरै रति जो निदान करै,
ससि सन सोभावंत मानियै जोबन मैं।
जुगति बिचारि सेनापति है बरनि कहै,
बर नर नारि दोऊ एक ही बचन मैं॥

परबन—पोरुए, पर्व। स्रवन की—सुनने की, कान की। पियूष—अमृत। सकुच—कसी हुई, कड़ी। पन—प्रतिज्ञा। बलमहि पाग राखै—पगड़ी कस कर पहनता है, प्रियतम को अनुरक्त रखती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(८९)

मैलन घटावै महा तिमिर मिटावै सुभ,
डीठि कौं बढ़ावै चारि बेदन बतायौ है।
सन्यौ घनसार सम सीतल सलिल रस,
सेनापति पुरबिले पुन्यन ही पायौ है॥
कैसे मन आवै अचरज उपजावै बीच,
फूलै सरसावै पीत बसन धरायौ है।
भव भय भंजन निरंजन के देखिबे कौं,
गंगा जू कौ मंजन सुअंजन बनायौ है॥

(९०)

जाके रोजनामै सेस सहस बदन पढ़ै,
पावत न पार जऊ सागर सुमति कौं।
कोई महाजन ताकी सरि कौं न पूजै नभ,
जल थल व्यापि रहै अद्‌भुत गति कौं॥
एक एक पुर पीछे अगनित कोठा तहाँ,
पहुँचत आप संग साथी न सुरति कौं।
बानियै बखानैं जाको हुंडी न फिरति सोई,
नाहु सिय रानी जू कौ साहु सेनापति कौं॥

डीठि—दृष्टि। रोजनामै—नित्य की कृति। सेस—शेश जी। सरि—समता। बेदन-वेदों ने, वैद्यों ने। बीच—तरंग, मध्य। सुरति—स्मरण, सुधि। बानियै—वाणी से, बनिये को।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिन्दी के शतक्रतु

चतुर्वेदी पं० द्वारकाप्रसाद शर्मा को अनुपम मौलिक रचना

वारिन हेस्टिंग्ज

उपरोक्त महाशय भारतवर्ष में अंग्रेज़ी साम्राज्य की जड़ जमाने वाले कहे जाते हैं। ये महाशय आरम्भ में ईस्ट इंडिया कम्पनी में क्लर्क थे। क्लर्की से उन्नति करके ये महाशय तत्कालीन भारत के अंग्रेज़ी राज्य के सर्व प्रधान शासक हो गये। इस पुस्तक को पढ़ कर एक तरफ़ तो एक छोटे आदमी और जाति की उन्नति का आनन्द और दूसरी तरफ़ एक सबसे बड़े आदमी और जाति की अवनति का हृदय विदारक दृश्य दिखाई देता है। हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी राज्य स्थापित करने के लिये वारिन हेस्टिंग्ज ने किस तरह नवाबों और बादशाहों को धोखा दिया, कुटिल नीति की चालें खेलीं और अन्याय किया, इसका पता इस पुस्तक से लगता है। इस पुस्तक के पढ़ने से कहीं घृणा, आश्चर्य, कहीं रोना, कहीं पछताना और कहीं अफ़सोस होता है। इस पुस्तक को आरम्भ करके बिना समाप्त किये आप नहीं छोड़ सकते। ऐतिहासिक पुस्तक होते भी आपको इस पुस्तक में उपन्यास का आनन्द आवेगा। भारतवर्ष का प्रारम्भिक अंग्रेज़ी इतिहास एक पढ़ने की चीज़ है जो इस पुस्तक के पढ़ने से चित्र की तरह सामने खड़ा हो जाता है। २॥)

पता--भारतवासी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिमालयवासी प्रसिद्ध योगी स्वामी शिवानन्द सरस्वती द्वारा लिखित

सचित्र

योगासन और अक्षय युवावस्था

एकाग्र मन सारी सिद्धियों का भण्डार है। बिना शरीर को स्थिर किये मन भी स्थिर नहीं हो सकता। शरीर को स्थिर रखने का एकमात्र उपाय आसन का अभ्यास है। आसन सिद्ध करके मनुष्य मानसिक सिद्धियों को ही नहीं पा सकता वरन कायिक सिद्धि अर्थात् अक्षय युवावस्था तक पा सकता है। उक्त पुस्तक में बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री और पुरुष सबके करने योग्य आसन हैं। १।)

सचित्र

प्राणायाम और अनन्तशक्ति

ब्रह्माण्ड के समस्त चर और अचर प्राणियों में जो जीवनी शक्ति है और जिससे संसार में गति का संचार होता रहता है उस महान शक्ति नाम प्राण है। इस प्राण पर जो अधिकार प्राप्त कर लेता है वह सब कुछ कर सकता है। भीम के अपरिमित बल, बालि के अजेयत्व, हनुमानजी के समुद्र लंघन, भीष्म की इच्छा मृत्यु और नारद के आकाश गमन के रहस्य का यही भेद है। इस प्राण पर अधिकार पाने की विद्या का नाम ही प्राणायाम है। उसी विद्या का उपदेश एक अनुभवी तथा प्रामाणिक लेखक ने वैज्ञानिक रूप से इस पुस्तक में दिया है। १।)

मिलने का पता—भारतवासी प्रेस, दारागंज-प्रायग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२।) में ३० किताबें !!

हमारी लोकहितकारी पुस्तकमाला की प्रत्येक पुस्तक =) की है। कोई सी ३० पुस्तकों का सेट २।) में दिया जाता है। एक सेट के साथ इसी पुस्तकमाला की अन्य पुस्तकें -) प्रति पुस्तक के हिसाब मिल सकती हैं। इस पुस्तकमाला की जीवनियों में चरित्रनायक का चित्र और अधिकांश में उसके उपदेश भी हैं। बच्चों और कम पढ़े लोगों के चरित्र सुधार का अनूठा साधन है। म्निलिखित पुस्तकें तैयार हैं।

छत्रपति शिवाजी,	गोस्वामी तुलसीदास
स्वामी रामतीर्थ	स्वामी शङ्कराचार्य
पृथ्वीराज चौहान	स्वामी विवेकानन्द
समर्थ रामदास	गुरु गोविन्दसिंह
गोपालकृष्ण गोखले	श्री रामानुजाचार्य
नेपोलियन बोनापार्ट	भगवान श्रीराम
चित्तरंजन दास	यादवेन्द्र श्रीकृष्ण
महाराणा प्रतापसिंह	सनातन शिक्षा,
रामकृष्ण परमहंस	मिचौनी
गौतम बुद्ध	सूर्य नमस्कार
महाराज रणजीत सिंह	हरिसिंह नलवा
गुरु नानक	लोकमान्य तिलक
अहिल्याबाई	महादाजी सेंधिया
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	महारानी लक्ष्मी बाई
मीराबाई	चित्तौर की कहानियाँ

Sri Pratap Singh Library Srinagar.

पता—भारतवासी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुपम अवसर से लाभ उठाइये

आलोक पुस्तकमाला

सुलभ मूल्य में हिन्दी की उत्तम कृतियों का आनन्द लेना हो तो आलोक पुस्तकमाला की पुस्तकें अवश्य पढ़िये। पुस्तकमाला पाँच भागों में विभक्त है; यथा १ कविता (हरा कवर), २ उपन्यास तथा कहानी (लाल कवर), ३ ऐतिहासिक (नीला कवर), ४ संस्कृत तथा धार्मिक साहित्य (अबीरी कवर), ५ अन्य विषय (बैंजनी कवर)। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ।।) है।

१—रसखान रत्नावली
२—भर्तृहरि शतक (सरल हिन्दी अर्थ सहित)
३—कविवर सोमनाथ की रासपञ्चाध्यायी
४—स्मृति शक्ति
५—राबर्ट क्लाइव
६—पद्माकर रत्नावली
७—घनानन्द रत्नावली
८—सेनापति रत्नावली
९—देव रत्नावली*
१०—भूषण रत्नावली*
११—बिहारी सतसई*
१२—वृन्द सतसई*

*छप रही है।

पता—भारतवासी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE